समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017
RNI No. 38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जनवरी 2018

वर्ष : 30, अंक : 13
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 दिसम्बर 2017
वार्षिक चंदा : ₹ 40/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 500/-
प्रति अंक : ₹ 2/-
ई-मेल : news@awgp.org
news.shantikunj@gmail.com

3 गायत्री मंत्र लेखन का विराट अभियान ढाई लाख पुस्तिकाएँ बाँटीं

4 **जयपुर** देव संस्कृति पुष्टिकरण के लिए भागीरथी संकल्प उभरे

6 जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में एनसीआर जोन का प्रथम युवा सम्मेलन

8 **प्रांतीय सृजनशील युवा सम्मेलन छत्तीसगढ़** छत्तीसगढ़ को बनायेंगे युग निर्माण प्रदेश

अपने मोबाइल पर डाउनलोड कीजिए एप

AWGP Literature

और

युग साहित्य निःशुल्क पढ़िये

- एप्लीकेशन 'गुगल प्ले स्टोर' पर उपलब्ध है।
- **वर्तमान में उपलब्ध हैं** – 450 पुस्तकें, अखण्ड ज्योति के 70 विशेषांक, आलेख, कहानियाँ, कविताएँ

रजिस्ट्रेशन अवश्य करायें

इस एप्लीकेशन के सामान्य प्रयोक्ता (user) के लिए सीमित पुस्तकें ही ऑनलाइन पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं, जबकि रजिस्टर्ड प्रयोक्ताओं के लिए ढेरों सुविधाएँ हैं। जैसे-

- डाउनलोड कर पुस्तकें ऑफलाइन पढ़ी जा सकती हैं। • पसंदीदा अंशों को अधोरेखांकित (underline) किया जा सकता है। अपनी प्राथमिकता के अनुसार चार अलग-अलग रंगों में पंक्तियों को अधोरेखांकित किया जा सकता है। • अधोरेखांकित अंशों को एक साथ प्राप्त किया जा सकता है। • बाद में इनके संदर्भ तक पहुँचा जा सकता है। • इन अंशों को सोशल मीडिया ग्रुप पर शेअर किये जाने की सुविधा है। • एक बार अधोरेखांकित किये अंश सदैव के लिए सुरक्षित रहेंगे। यहाँ तक कि यदि आपका मोबाइल बदल जाये या एप्लीकेशन अपडेट हो जाये, तो भी उन्हें फिर से प्राप्त किया जा सकता है।
- आलेखों को ऑफलाइन भी सुना जा सकता है।
- एप्लीकेशन प्रयोक्ता किये गये दैनिक अध्ययन का समय बताती है, जिससे निरंतरता बनाये रखने में सहायता मिलती है।
- विषय के अनुसार पुस्तकें खोजने तथा पढ़ी जा रही पुस्तक के पृष्ठ, अध्याय बदलने की आसान सुविधा है। जहाँ अध्ययन समाप्त किया, वहीं से पुनः प्रारंभ करने में आसानी।
- अक्षरों का आकार तथा दिन या रात के अनुरूप मोबाइल स्क्रीन का रंग बदलने की सुविधा है ताकि आँखों पर अधिक तनाव से बचा जा सके।

प्रयोक्ता 'एडब्ल्यूजीपी लिटरेचर' एप्लीकेशन अथवा वेबसाइट http://literature.awgp.org के द्वारा अपना पंजीयन (Registration) करा सकते हैं।

हम प्रकाश की ओर ही चलें

सुख-दुःख का कारण

दुःख का एक कारण है अज्ञान। अज्ञान-अर्थात् किसी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को न जानना। वास्तविकता का ज्ञान न होने से ही मनुष्य गलती करता है और दण्ड पाता है। यही दुःख का स्वरूप है अन्यथा परमात्मा न किसी को दुःख देता है, न सुख। वह निर्विकार है, उसकी किसी से शत्रुता नहीं जो किसी को कष्ट दे, दण्ड दे।

प्रकाश ज्ञान का प्रतीक है इसीलिये वह उपासनीय है। परमात्मा प्रकाश-रूप में, ज्ञान-रूप में ही सर्वत्र व्याप्त है। जो उसे इस रूप में जानते और भजन करते हैं उनका अज्ञान दूर होता है। अज्ञान दूर होने से मनोविकार मिटते हैं, दोषपूर्ण कार्य नहीं होते, फलस्वरूप उन्हें किसी प्रकार की यातना भी नहीं भुगतनी पड़ती। ज्ञानवान् परमात्मा की सृष्टि को मंगलमय रूप में देखता है। उसके लिये इस सृष्टि में आनन्द ही आनन्द होता है।

दीपक की प्रेरणा-ज्ञान की उपासना

भारतीय-संस्कृति में दीपक का जो असाधारण महत्त्व है वह इसी दृष्टि से है। दीपक जीवन के ऊर्ध्वगामी होने, ऊँचे उठने और अन्धकार को मिटा डालने की प्रेरणा देता है, इसलिये वह प्रत्येक मंगल कार्य में प्रतिष्ठित होता है। भावार्थ यह है कि मनुष्य प्रकाश की व्याख्या को समझे। संसार में जो अन्तर्निहित ज्ञान है, उसे अपने हृदय में प्रवेश होने दे। जब तक मनुष्य के लिये यह सत्य प्रकट नहीं होता, तब तक उसके जीवन का कुछ मूल्य नहीं होता।

दीपक कहता है कि तुम्हारे अन्दर जो प्राण जलता है, जो सत्, चित् और आनन्दमय है तुम उसे ढूँढ़ो, जानो और अपने जीवन के अभावों को दूर कर लो। प्रकाश में सब कुछ साफ और स्पष्ट दिखाई देता है। भय नहीं लगता। ज्ञान से मनोविकार शान्त होते हैं और सांसारिक शूल मिटते हैं। इसलिये जब यह कहा जाता है कि दीपक की उपासना करो, तो उसका संकेत ज्ञान की उपासना ही होती है। ज्ञान,अर्थात् प्रकाश ही परमात्मा का दिग्दर्शन स्वरूप है। इसलिये प्रकाश की पूजा परमात्मा की ही पूजा हुई।

एक तत्व, अनेक रूप

प्रकाश ही एक तत्व है जो विभक्त होकर दृश्य और द्रष्टा बन गया है। वह परमात्मा भी है और मनुष्य शरीर में प्रतिष्ठित आत्म-चेतना भी। ऋग्वेद का मन्त्र दृष्टा लिखता है-

अयं कविरकविषु प्रचेता-मर्त्येष्वाग्निरमृतो नि धायि। समानो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम।। – ऋग्वेद 7/4/4

अर्थात् हे प्रकाश रूप परमात्मा! तुम अकवियों में कवि होकर, मृत्यों में अमृत बनकर निवास करते हो। हे प्रकाश स्वरूप! तुम से हमारा यह जीवन दुःख न पाये। हम सदैव सुखी बने रहें।

विश्व में व्याप्त परम-तेज की गाथा ऋषि दार्शनिकों ने पग-पग पर की है। माण्डूक्य

उपनिषद् में सृष्टि और तेज दोनों को कार्य और कारण माना है। सृष्टि फल है तो प्रकाश उसका बीज। दोनों एक-दूसरे में लिपटे हुये हैं। न प्रकाश से संसार विलग है, न संसार से प्रकाश अलग है। दोनों प्रेम और परमात्मा की तरह अलग-अलग दिखाई देते हुए भी एकरूप हैं।

जीवन की गति को बदलें

पर हम उस पूर्ण प्रकाश को देख नहीं पाते, क्यों? इसलिये कि हमारा गमन अंधकार की ओर है। अंधकार अज्ञान का वैसा ही प्रतीक है जैसा ज्ञान का प्रकाश। बाह्य जीवन में बुरी तरह भटके होने का नाम अज्ञान है। हम आन्तरिक सत्य को न ढूँढ़कर भौतिक सुखों से चिपटे हुये हैं। उन्हें छोड़ने को जी नहीं करता। वह अंधकार की ओर बढ़ना हुआ। अधियारे में साफ नहीं सूझता। कहीं पत्थर से टकरा जाते हैं, कहीं ऊँचे-नीचे में लड़खड़ा जाते हैं। कहीं पाँव में काँटा चुभ जाता है, तो कहीं फिसलकर गिर पड़ते हैं। अंधकार के गर्भ में दुःख ही दुःख भरा है इसलिये वह अवांछनीय है, घृणित और त्याग देने योग्य है।

अग्नि में वह शक्ति है कि वह लोहे के किसी बड़े टुकड़े को पिघलाकर छोटे-छोटे टुकड़े कर दे या अनेक टुकड़ों को जोड़कर एक कर दे। कण-कण में जीवन बिखेरने या उन्हें समेटने, एक कर देने का कार्य प्रकाश द्वारा होता है। इस प्रकाश की प्राप्ति ही हमारा जीवनोद्देय है।

सूर्य की विपरीत दिशा में छाया की ओर बढ़ने पर छाया तो हाथ नहीं आती, सूर्य भी दूर हटता जाता है। पर जब सूर्य की ओर बढ़ते हैं तो रास्ता भी साफ दिखाई देता है, सूर्य की समीपता अनुभव करते हैं और भोग-रूपी छाया भी पीछे-पीछे चलने लगती है। जिस प्रकाश के न होने से मार्ग भ्रष्ट हो जाता है वह यह आत्मज्ञान या ईश्वर-प्राप्ति ही है। इसलिये प्रार्थना की जाती है-

तव त्रिधातु पृथिवी उतद्यौर्वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त। त्वम् भासा रोदसी अततन्थाजस्रेण शोचिषा शोशुचानः।।

अर्थात् हे वैश्वानर देव! वह पृथ्वी अन्तरिक्ष तथा द्युलोक तुम्हारा ही अनुशासन मानते हैं। तुम प्रकाश द्वारा व्यक्त होकर सर्वत्र व्याप्त हो। तुम्हारा तेज ही सर्वत्र उद्भासित हो रहा है, हम तुम्हें कभी न भूलें।

प्रकाश की अन्तःचेतना में सत्य और चेतना के साथ सौन्दर्य भी है। अज्ञान अंधा और कुरूप है, उस पर सदैव प्रकाश शासन किया करता है। व्यावहारिक जीवन में भी ज्ञानवान् ही अज्ञानियों पर विजयी होते है। ज्ञान का ही सर्वत्र आदर होता है, वह इसी रूप में है। सौन्दर्य सबको मधुर और प्यारा लगता है। सब उसकी ओर आकर्षित होते हैं और उसके समीप कुछ क्षण बिताना चाहते हैं। अपने इस रूप में वह लौकिक सुखों का दाता बन जाता है। इसलिये यह आवश्यक हो जाता है कि अंधकार की ओर न जाकर प्रकाश की ओर गमन करें। तब यह प्रकाश ही आनन्द बनकर जीवन में ओत-प्रोत हो जाता है।

वाङ्मय 'ईश्वर कौन है? कहाँ है? कैसे है?', पृष्ठ 4.92 से संकलित, संपादित

समय के अनन्त प्रवाह की, मनुष्य द्वारा निर्धारित एक इकाई भर है 'वर्ष'

इस तथ्य को समझें, पुराने वर्ष का मानें आभार, नये को करें अंगीकार

अखण्ड काल प्रवाह

परमात्मा की तरह समय भी अनन्त, अखण्ड, अनादि, अच्छेद्य, अभेद्य कहा जाता है। जब कुछ नहीं था, सृष्टि नहीं बनी थी, तब भी समय था और जब कुछ नहीं रहेगा, सृष्टि का विलय हो जायेगा, तब भी समय रहेगा। यह बात और है कि काल के उस अनन्त प्रवाह के उन खण्डों (जब सृष्टि न थी या नहीं रहेगी) की व्याख्या करना मनुष्य की बुद्धि के परे की बात है। भले ही हम उसकी गणना या व्याख्या न कर सकें, किन्तु उसके अस्तित्व को तो मानना ही पड़ता है।

ऋग्वेद के अध्याय 190 में तत्त्वज्ञ ऋषियों ने काल की विराटता और सामर्थ्य को शब्दों में समझाने का प्रयास किया है। सामान्य बुद्धि से सृष्टि के उदय से लेकर विलय तक का समय बहुत लम्बा, अरबों-खरबों वर्ष का होता है। किन्तु ऋषि कहते हैं काल की विराटता के सापेक्ष में यह क्रम पलक झपकने जितनी अवधि में पूरा हो जाता है। सृष्टि के प्राणियों को तो काल का बोध उत्पन्न पिण्डों और उनकी गति के आधार पर ही होता है।

वेद के उक्त कथन को आज के पदार्थ विज्ञान के संदर्भ से भी स्पष्ट समझा जा सकता है। हमारी धरती अपनी धुरी पर जितने समय में 360 अंश घूम लेती है, उस समय की अवधि को हम **अहोरात्र** (दिन-रात) कहते हैं। इसी प्रकार भूमि सूर्य के चारों ओर जितने समय में एक परिक्रमा पूरी कर लेती है, उसे हमने एक '**वर्ष**' कहा है। यदि पृथ्वी की अपनी धुरी पर घूमने की गति बदल जाये तो हमारे दिन का समयमान बदल जायगा। इसी प्रकार यदि सूर्य के चारों ओर घूमने की गति बदल जाने से एक वर्ष में दिनों की संख्या बदल जायेगी। लेकिन काल का, समय का वह अखण्ड प्रवाह तो उसी रूप में बना ही रहेगा।

यह तथ्य उदाहरण से समझें। मान लें कि भूमि की अपनी धुरी पर घूमने की गति दो गुनी हो जाये और सूर्य परिक्रमा की गति यही बनी रहे तो हमारा वर्ष 365.25 दिन की जगह 730.5 दिन का हो जायेगा। इसके विपरीत यदि धुरी पर भ्रमण गति यही रहे और सूर्य की परिक्रमा की गति आधी हो जाये तो भी हमारा वर्ष 730.5 दिन का हो जायेगा। दोनों ही स्थितियों में काल के विराट प्रवाह का रूप तो वही रहेगा। वास्तव में पिण्डों की गति के सापेक्ष, निरपेक्ष मूल स्वरूप (एब्सोल्यूट टाइम) की अवधारणा बड़ी दुर्बोध है।

चेतना के सापेक्ष :- ऊपर की पंक्तियों में पिण्डों की गति के सापेक्ष समय के बोध की समीक्षा की गयी। यदि चेतन के सापेक्ष इसकी समीक्षा की जाये तब भी मनुष्य बुद्धि इसी तरह बौनी सिद्ध होने लगती है।

उक्त तथ्य को भी कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझने का प्रयास करें।

प्राणी का जीवन, उसका गर्भकाल, युवा होने-प्रजनन में समर्थ होने की समय की अवधि पिण्ड की गति के सापेक्ष नहीं, चेतन के संकल्प के सापेक्ष होती है। मनुष्य के लिए गर्भकाल औसतन 9 माह है और औसत आयु 80 से 100 वर्ष मान्य है। गौ वंश के लिए भी गर्भकाल उतना ही, लगभग 9 माह है, किन्तु आयु 20-25 वर्ष ही है। गाय का शिशु जन्म के एकाध घंटे में ही अपने पैरों खड़ा हो जाता है, किन्तु मनुष्य के शिशु को 10 से 12 माह का समय लग जाता है। मच्छर-मक्खी का जीवन कुछ दिनों का ही होता है। उन्हें जवान, प्रजनन में समर्थ होने में एक-दो दिन का समय ही पर्याप्त होता है। जीवन की कौन-सी प्रक्रिया कितने समय में पूरी होगी, यह जीव के अन्दर स्थित चेतन सत्ता के संकल्प पर निर्भर है।

उदाहरण से समझें। एक ही जीव-चेतना जब अलग-अलग योनियों में जाती है तो अपने गर्भकाल, सारी जवानी, सारे जीवन की अनुभूति समय की भिन्न-भिन्न अवधियों में करती है। उसकी समय की अनुभूति कुछ घंटों, कुछ दिन से लेकर कई वर्षों तक की हो सकती है, किन्तु समय के अखण्ड प्रवाह में उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। समय की अवधि का बोध पिण्ड गति के सापेक्ष या चेतन संकल्प के सापेक्ष तो समझ में आता है, किन्तु उसके विराट स्वरूप को तो परमात्मा की तरह ही नेति-नेति कहकर 'नमन' किया जा सकता है।

वर्ष-संवत्सर की गणना?

जो भी हो, हमारी पृथ्वी पर समय की गणना दिवस और वर्षों की इकाई के रूप में मान्य है। इसे सूर्य और धरती की सापेक्ष गतियों ने निर्धारित कर दिया है। यदि हम धरती के गुरुत्वाकर्षण के बाहर चले जायें तो हमें वहाँ न दिन-रात का बोध होगा और न वर्ष का। अगणित सूर्यों के चारों ओर अगणित पिण्ड भिन्न-भिन्न गतियों से घूम रहे हैं। हम उनसे परे हैं तो दिवस या वर्षों का बोध कहाँ हो पायेगा? लेकिन हम भूमि के प्रभाव क्षेत्र में है इसलिए दिवस और वर्ष की इसी मान्यता को स्वीकार करते हैं।

अब दूसरा प्रश्न उभरता है कि हम वर्ष की गणना कब से प्रारंभ करें। एक वर्ष का चक्र तो किसी क्षण से प्रारंभ माना जा सकता है। वेद ने एक दिन को '**अहोरात्र चक्र**' और वर्ष को '**संवत्सर चक्र**' कहा है। जैसे गोलाकार वस्तु की नाप किसी भी बिन्दु से प्रारंभ की जा सकती है, इसी तरह अहोरात्र या संवत्सर की गणना भी किसी भी क्षण से की जा सकती है।

'संवत्सर' की शब्द व्युत्पत्ति समझें तो उसे 'संवसन्ति ऋतवो अत्र' (अर्थात् संवत्सर में सभी ऋतुएँ रहती हैं।) माना जाता है। अब यह ऋतुचक्र छः ऋतुओं में से कहीं से भी प्रारंभ किया जा सकता है। वर्ष का, संवत्सर का प्रारंभ भी मनुष्य की मान्यताओं पर ही निर्भर करता है। जहाँ से प्रारंभ मान लिया जाय, उसी बिन्दु पर पुराने वर्ष का समापन और नये वर्ष का शुभारंभ माना जा सकता है। इसे भी विभिन्न क्षेत्रों और वर्गों के व्यक्तियों ने अपनी-अपनी आस्था के अनुसार निर्धारित कर लिया है। कहीं विक्रम, कही शक, कहीं ईसवी, कही हिजरी आदि वर्षों के प्रारंभ या समापन की तिथियाँ सम्बन्धित व्यक्तियों की आस्था के अनुसार मान ली गयी हैं। उन्हीं के अनुसार उल्लासभरी प्रवृत्तियों का क्रम चल पड़ता है।

यही नहीं, व्यवहार में देखें तो व्यक्तिगत मान्यताओं के अनुसार भी नये वर्ष का उत्साह उभरता है। जो जन्मदिन को महत्त्व देते हैं, वे जन्मदिन से जीवन के नये वर्ष की शुरुआत मानते हैं। विवाह दिन को महत्त्व देने वाले लोग भी उस दिन दाम्पत्य का नया वर्ष शुरू मान लेते हैं। गुरुदीक्षा को महत्त्व देने वाले व्यक्ति अपने दीक्षा दिवस को ही केन्द्र बिन्दु मानकर उल्लासभरी नयी गतिविधियाँ प्रारंभ करते हैं। उक्त तथ्यों के आधार पर किसी भी आस्थावान व्यक्ति के जीवन में नये वर्ष का नया उल्लास अनुभव करने के कई अवसर आते हैं। भारतीय संस्कृति के तत्त्व दर्शन के अनुसार तो रोज जागरण के साथ नया जन्म मानने वाले साधक प्रतिदिन उस नवीन उल्लास का अनुभव कर सकते और लाभ उठा सकते हैं।

क्या दे गया, क्या ले आया?

उक्त समीक्षात्मक चिन्तन के आधार पर निष्कर्ष यही निकलता है कि वर्ष या संवत्सर की अवधि ग्रह-नक्षत्रों की सापेक्ष गति के अनुसार निश्चित हो जाती है, लेकिन उस चक्र को कहाँ से शुरू करें, यह बात वर्ग विशेष या व्यक्ति विशेष की आस्था पर निर्भर करती है। लोक प्रचलन की दृष्टि से ईसवी सन् के साथ वर्ष परिवर्तन की लहर सबसे अधिक प्रभावी दिखती है। उसके अनुसार सन् 2017 जा रहा है और वर्ष 2018 आ रहा है। जो भी हो, आस्था या परम्परा के अनुसार जाने वाला वर्ष क्या देकर जाता है और नया वर्ष क्या लेकर आता है, इस पर चिन्तन करें तो निर्विवाद रूप से निम्नानुसार तथ्य सामने आते हैं।

- जाने वाला वर्ष कुछ बेशकीमती अनुभव देकर जाता है। इसके लिए उसके प्रति आभार व्यक्त किया जाना चाहिए।
- आने वाला वर्ष नये बहुमूल्य अवसर उपहार में लेकर आता है, उन उपहारों को स्वीकार-अंगीकार करना चाहिए। नये वर्ष की मान्यता के आधार पर जो आन्तरिक उल्लास उभरता है, उसे पुराने के प्रति आभार व्यक्त करने में और नये के उपहारों को स्वीकार करने में लगाना ही जीवन की प्रगति के लिए उपयोगी होता है। दोनों का अपना-अपना असाधारण महत्त्व है। सूझबूझ या विवेक की कमी के कारण लोग उनका लाभ नहीं उठा पाते।

भरपूर लाभ उठायें

मनुष्य का सहज स्वभाव है कि नयेपन के लिए उसके मन में उत्साह उभरता है। अपनी आस्था के अनुसार नये वर्ष को जीवन के लिए एक नयी सौगात मानकर कुछ नया करने का उत्साह, उल्लास उभरता है। सामान्य रूप से नये वस्त्र पहनकर खुशी प्रकट करने के लिए समारोह मानकर, अपनों को भेंट-उपहार देकर उस उत्साह-उल्लास को सार्थक मान लेते हैं। इसे किसी हद तक उचित मान लें, तो भी समय की एक मूल्यवान इकाई के अनुदानों को पाने की दृष्टि से पर्याप्त तो कतई नहीं है। कई बार तो यह हर्षाभिव्यक्ति विकृत होकर उल्टी हानिकारक हो जाती है। जैसे प्रसन्नता को नशे के साथ, अश्लील प्रसंगों के साथ जोड़ने की परम्परा प्रचलन में भले ही आ गयी हो किन्तु, वह ऐसे पावन प्रसंग के प्रतिकूल ही मानी जायेगी।

आस्था के अनुसार नया वर्ष अपने किसी श्रद्धास्पद व्यक्ति या प्रसंग के साथ सम्बद्ध होता है। उस श्रद्धास्पद के सुझाये आदर्शों को अपनाने में प्रसन्नता व्यक्त की जाये तो उसे संस्कृति का अंग कहा जा सकता है, किन्तु यदि वह उसके विपरीत प्रसंगों में व्यक्त की जाती है तो निश्चित रूप से उसे अविवेकपूर्ण विकृति ही कहा जायेगा। परमात्मसत्ता के समकक्ष समय की एक ईकाई के नाते उभरे उल्लास को विकृतियों से बचाकर संस्कृति से जोड़ने के विवेक और साहसपूर्ण प्रयास किए और कराये जाने चाहिए। जाने वाले वर्ष के अनुभव-आशीर्वाद और आने वाले के उपहार-अवसरों का पूरा लाभ उठाने की तैयारी की जानी चाहिए।

अनुभव :- अच्छे या बुरे, सफलता या असफलता दोनों प्रकार के अनुभव बेशकीमती होते हैं। उनका उपयोग भविष्य को संवारने, शानदार बनाने में किया जा सकता है। तमाम महान् व्यक्तियों ने ऐसा ही किया है। सफलता के अनुभव उत्साह बढ़ाते हैं और असफलता के अनुभव सही दिशा का बोध कराके जाते हैं। बीते वर्ष द्वारा दिए गये अनुभवों को उसका आशीर्वाद मानकर प्रसन्नतापूर्वक नये वर्ष में प्रवेश करने का मन बनाना चाहिए।

विगत वर्ष से अनुभव लेने की जगह यदि शिकवा-शिकायतें की जायें तो कुछ मिलने वाला नहीं। ऐसा न होता तो अच्छा होता, ऐसा होता तो कुछ अधिक लाभ होता। यह चिन्तन हाथ में आये समय को व्यर्थ गँवाने और मानसिक तनाव या व्यथा देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं दे पाता। बीते वर्ष द्वारा दिए गये अनुभवों के लिए उसका आभार मानने वाले व्यक्ति नये वर्ष द्वारा लाये जाने वाले अवसरों-उपहारों का भली प्रकार लाभ उठा पाते हैं।

अवसर-समय के प्रवाह के साथ आते हैं और निकल जाते हैं। वे किसी की प्रतीक्षा नहीं करते। जो निकल गया वह बेकार गया और साथ में टैक्स के रूप में हमारा उतना समय लेता गया। जो आ रहा है, उसकी कीमत हमारे द्वारा किए गये उपयोग के आधार बनती है। उपयोग अनुभवों और तत्परता, कर्मठता के माध्यम से ही किया जाता है। विगत के आशीर्वाद रूप अनुभवों को संजोइये और अपनी पूरी तत्परता से आगत के द्वारा भेंट में दिए जाने वाले अवसरों को अंगीकार करने की तैयारी कीजिए।

हिम्मत मत हारिए :- जी हाँ, अवसर आया और हम चूक गये, इससे निराश मत होइये। इससे अपनी तत्परता घट जाती है और आने वाले नये अवसर का लाभ उठाने की संभावना भी कम हो जाती है।

यों समझिये :-आप क्रिकेट खेल रहे हैं। बल्ला आपके हाथ में है। हर अवसर एक गेंद के रूप में आता है। किसी को आप बल्ले पर नहीं ले पाते। किसी शॉट को विरोधी टीम के खिलाड़ी रोक लेते हैं। कोई बात नहीं। ध्यान रखिये कि इस खेल में कितनी ही बॉलें बल्ले पर न आयें या स्ट्रोक रोक लिए जायें, आप तब तक आउट नहीं होते जब तक आप स्वयं बल्ला रख नहीं देते। निराश होना स्वयं ही बल्ला रख देना है। खेल भावना के साथ जमे रहिए। अनुभवों का इस्तेमाल कीजिए, बल्ले पर पकड़ मजबूत रखिये, हर बाल (अवसर) को पूरी तत्परता से लीजिए। रन बनेगा, चौके-छक्के भी लगेंगे।

जी हाँ तो पुराना वर्ष बहुमूल्य अनुभव देकर जा रहा है और नया वर्ष बहुमूल्य अवसर लेकर आ रहा है। हमें नये वर्ष में, नयी पारी अधिक तत्परता, प्रसन्नता के साथ खेलनी है। करिए तैयारी। पुराने को अलविदा कहकर, नये के स्वागत में समारोह मनाकर ही न रह जाइये। पुराने के अनुभव आशीर्वाद के साथ नये के अवसर-उपहारों को अंगीकार करने की तैयारी कीजिए।

नया वर्ष मंगलमय हो-विकासमय हो।

***

गायत्री मंत्र लेखन का विराट अभियान

स्व. श्री रमेशचंद्र खंडेलवाल की पावन स्मृति में पुत्रवधु एवं धर्मपत्नी ने निःशुल्क बाँटी 2,50,000 मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ

मनावर, धार। मध्य प्रदेश

जिन आदर्शों के लिए जीवन समर्पित किया, अपने परिवारी जनों को उन आदर्शों को अपनाते हुए देखकर हृदय गद्गद हो जाता है। निःसंदेह स्व. श्री रमेश चंद्र खण्डेलवाल की आत्मा अपनी पुत्रवधु श्रीमती विनीता खण्डेलवाल, धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी खण्डेलवाल एवं अन्य परिवारी जनों की लोकमंगलकारी भावनाओं और कार्यों को देख तृप्ति, तुष्टि, अथाह शांति की अनुभूति कर रही होगी, जिसके कारण लाखों लोगों को आत्मिक प्रगति का अवसर प्राप्त हो रहा है।

स्व. श्री रमेश चंद्र खण्डेलवाल गायत्री शक्तिपीठ मनावर से जुड़े नैष्ठिक कार्यकर्त्ता थे। उनकी पुत्रवधु ने अपने श्वसुर की पुण्य स्मृति में मंत्र लेखन का विराट अभियान चला रखा है। उन्होंने ढाई लाख गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ निःशुल्क वितरित करने का संकल्प लिया था। विगत गायत्री जयंती से चल रहे अभियान के अंतर्गत ये पुस्तिकाएँ मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान के विविध स्थानों में वितरित की जा रही हैं। अंजड़ निवासी प्रमुख क्षेत्रीय कार्यकर्त्ता श्री महेन्द्र भावसार के अनुसार अब तक दो लाख से अधिक मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ बाँटी जा चुकी हैं। जिस गति से और जिस लोकप्रियता के साथ यह मंत्र लेखन साधना अभियान चल रहा है, उसे देखते हुए वे अपने संकल्प को आगे बढ़ाने पर विचार कर रही हैं।

केन्द्रीय कारागार भोपाल में 21,000 पुस्तिकाएँ बाँटीं

श्रीमती विनीता खण्डेलवाल केन्द्रीय कारागार भोपाल के बंदियों को संबोधित करते हुए

कुछ ही दिन पूर्व भोपाल स्थित केन्द्रीय कारागार में मंत्रलेखन पुस्तिकाओं के वितरण के लिए विशेष समारोह आयोजित किया गया। श्री आनंद विजयवर्गीय, श्री मेहन्द्र भावसार एवं श्रीमती विनीता खण्डेलवाल ने बंदियों को संबोधित प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिये। जेल अधीक्षक श्री दिनेश नरगावे एवं जेलर श्री लवसिंह जी की उपस्थिति में बंदियों के बीच 21,000 मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित की गयीं। युगऋषि का प्रेरणाप्रद साहित्य भी प्रदान किया गया।

जेलों में लोकप्रिय है अभियान

स्व. श्री रमेशचंद्र जी के परिवार ने इस अभियान के माध्यम से पिछड़ों, पीड़ितों में आत्मबल एवं मनोबल के संचार को अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया है। तदनुसार प्रत्येक जेल का प्रत्येक बंदी गायत्री मंत्र लेखन साधना करे, ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं। मध्य प्रदेश की 35 जेलों में मंत्र लेखन अभियान प्रारम्भ हो गया है। खण्डेलवाल परिवार ने जाकर 17 जेलों में पुस्तिकाएँ वितरित की हैं। इस अवसर पर बंदियों को जीवन के उत्कर्ष के लिए महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया जाता है और बुराइयाँ त्यागने के संकल्प भी कराये जाते हैं।

गर्भवती बहिनें भी

बंदियों के सुधार के अलावा श्रेष्ठ संतति की चाह रखने वाली गर्भवती बहिनों से साधना कराने का भी प्रमुख लक्ष्य है। इसके लिए आंगनबाड़ी प्रभारियों से संपर्क किया जा रहा है और गर्भवती बहिनों तक पुस्तकें पहुँचायी जा रही हैं। इस कार्य में शक्तिपीठ से जुड़े महिला मण्डलों का भी भरपूर सहयोग मिल रहा है।

युवा किसान रोहित साहू जैविक कृषि के लिए राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित हुए

पाटन, दुर्ग। छत्तीसगढ़

तहसील पाटन के अचानकपुर गाँव के युवा किसान रोहित साहू के साथ एक घटना ऐसी घटी कि वे जैविक कृषि के प्रबल प्रचारक बन गये। इस विशिष्ट कार्य के लिए 5 नवम्बर को भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने उन्हें डॉ. खूबचंद बघेल कृषक रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया।

कीटनाशक की जलन से मिली प्रेरणा

श्री रोहित साहू राजनीति शास्त्र से एम.ए. हैं। एक बार खेत में कीटनाशक का छिड़काव करते समय गलती से दवाई उनके हाथ पर गिर गयी। इससे उनके हाथ पर अजीब सी जलन होने लगी। उन्होंने कृषि विशेषज्ञ से सलाह ली, जिसने उन्हें जलन के स्थान पर गाय के घी लगाने को कहा। घी लगाते ही उनकी जलन शांत हो गयी। उनके मन में विचार आया कि गाय के घी में इतनी शक्ति है तो गाय की बाकी चीजें भी शक्तिशाली होंगी।

युवा कृषक रोहित साहू नई-नई किस्मों के बीजों की खोज एवं परम्परागत धान के संरक्षण के लिए भी कार्य कर रहे हैं। उनके अनुसार अब तक 50 से अधिक किस्मों के धान के बीजों का संरक्षण किया जा चुका है। उन्होंने सन् 2022 तक रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग पूरी तरह से बंद करने का संकल्प लिया है।

श्री रोहित साहू ने तीन एकड़ में पूरी तरह से जैविक कृषि और साढ़े पंद्रह एकड़ में बहुत कम रासायनिक खाद का उपयोग करना आरंभ कर दिया। पहले लोग उनका मजाक उड़ाने लगे। उनका मानना था कि रासायनिक खाद के बिना खेती हो ही नहीं सकती। लेकिन जैविक कृषि का परिणाम देखा तो आश्चर्यचकित हैं। अन्य किसान भी अब जैविक कृषि करने लगे हैं और अच्छे परिणाम प्राप्त कर रहे हैं।

गर्भ संस्कार महोत्सव दो दिनों में हुईं 12 कार्यशालाएँ

आँगनबाड़ी केन्द्रों पर आरंभ होंगे गर्भ संस्कार के कार्यक्रम

अलवर। राजस्थान

गायत्री परिवार ट्रस्ट करौली कुण्ड, अलवर द्वारा जिले में गर्भ संस्कार आयोजनों को लोकप्रिय बनाने के लिए 3 एवं 4 दिसम्बर को कार्यशालाओं की विशिष्ट शृंखला आयोजित की। इस अभियान को गति दे रही शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. गायत्री शर्मा एवं डॉ. ओ.पी. शर्मा, सुश्री ऋतु सिंह अलवर पहुँचे। डॉ. अमिता सक्सेना, स्त्री रोग विशेषज्ञ, ट्रस्टी गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर एवं कई अन्य विशेषज्ञों ने भी सभी कार्यशालाओं में उनका सहयोग किया। उन्होंने अलग-अलग वर्गों को पावर पॉइण्ट के माध्यम से गर्भ संस्कार की वैज्ञानिकता, वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता और श्रेष्ठ संतति की चाह रखने वालों की मनोकामना पूरी हो, इसके लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे बृहद् अभियान की विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. गायत्री शर्मा जी के साथ आई.एम.ए. हॉल में आयोजित कार्यशाला में सम्मानित वे स्त्री रोग विशेषज्ञ बहिनें, जो गर्भवती बहिनों को गर्भ संस्कार कराने के लिए प्रेरित करती हैं

सम्मान

3 दिसम्बर को 6 स्थानों पर गर्भ संस्कार कार्यशालाएँ आयोजित हुईं। गायत्री शक्तिपीठ अलवर पर आयोजित कार्यशाला का पचास से अधिक कार्यकर्ताओं ने लाभ लिया। सायंकाल राजीव गांधी राजकीय चिकित्सालय अलवर के आई.एम.ए. हॉल में हुई। इसमें वे दस स्त्री रोग विशेषज्ञ महिला डॉक्टर भी उपस्थित थीं, जो स्थानीय कार्यकर्त्ताओं की प्रेरणा से अपने अपने चिकित्सालयों में गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार के बारे में बताती हैं और उन्हें 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' पुस्तक भी देती हैं। डा.गायत्री शर्मा ने गायत्री मंत्र का दुपट्टा पहनाकर तथा तिलक लगाकर उन्हें सम्मानित किया।

4 दिसम्बर को (1) ओसवाल जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अलवर में कक्षा10,11 व 12 के 200 छात्र-छात्राओं के बीच, (2) ठाकुर दुर्गपाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय व ठाकुर दुर्गपाल नर्सिंग कॉलेज में स्टाफ सहित प्रशिक्षणार्थियों के बीच (3) जी.डी. महिला महाविद्यालय, अलवर में (4) जैन बी.एड. कॉलेज अलवर में (5) जैन कॉमर्स कालेज के स्टाफ व छात्र-छात्राओं के बीच गर्भ संस्कार विषय पर शांतिकुंज प्रतिनिधियों के उद्बोधन हुए।

गायत्री शक्तिपीठ करोली कुण्ड अलवर पर 50 से अधिक आँगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी हुई। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रेखा, जो गायत्री शक्तिपीठ गुरुग्राम की ट्रस्टी भी हैं, ने उन्हें गर्भ में पल रहे शिशु पर माँ के आहार, विचार, व्यवहार के प्रभाव और गर्भ संस्कार के विषय में जानकारी दी। उन्होंने अपने संपर्क में आने वाली सभी गर्भवती बहिनों को गर्भ संस्कार के लिए सहमत कर समाज की बड़ी सेवा करने का आह्वान किया।

दो दिनों में इतने सघन और प्रभावशाली कार्यक्रमों के संयोजन में समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. सरोज गुप्ता, श्रीमती विमला अरोड़ा, श्री विजय गुप्ता, श्री राजेंद्र सेठी, श्री ज्ञानेंद्र शर्मा और श्री रघुवीर सिंह नरूका का विशेष सहयोग रहा। श्री सतीश कुमार सारस्वत ने इन संगोष्ठियों को जिले के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए जानकारी दी कि अलवर जिले में शीघ्र ही महिला बाल विकास विभाग के सहयोग से आंगनबाड़ी केन्द्रों पर गर्भ संस्कार आरंभ किये जायेंगे।

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

सबने मिलकर किया गरीब कार्यकर्त्ता बहन की बेटी का विवाह

गाज़ियाबाद। उत्तर प्रदेश

सतयुगी समाज में गाँव की बेटी का विवाह एक सामाजिक कर्त्तव्य माना जाता था। उसका विवाह केवल माता-पिता नहीं गाँव का हर सदस्य मिलकर करता था। पर आजकल यह कहाँ दिखाई देता है?

लेकिन गाज़ियाबाद के प्रताप विहार क्षेत्र निवासी गायत्री परिवार की वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्रीमती संतोष दीक्षित की पाँचवी और अंतिम बिटिया सौ. कां. प्रिया का विवाह कुछ इस प्रकार सम्पन्न हुआ कि उस सतयुगी समाज की संकल्पना साकार हो उठी।

इस विवाह में परम पूज्य गुरुदेव का कथन, 'तुम मेरा काम करो, मैं तुम्हारा काम करूगाँ'' चरितार्थ होता दिखाई दिया।

श्रीमती संतोष दीक्षित की सेवा निवृत्ति के बाद आर्थिक स्थिति अत्यंत नाजुक थी, जिंदगी समस्याओं से घिरी थी। विवाह तो क्या, घर चलाना भी मुश्किल था। ऐसे में बेटी के विवाह की चिंता सता रही थी।

ऐसे में इंदिरापुरम, वसुंधरा, गाज़ियाबाद के कार्यकर्त्ता सहायता के लिए आगे आये। सबने मिलकर प्रयास किया तो गुरुकृपा से बिना दहेज की माँग के सुयोग्य वर मिल गया। घर की अन्य समस्याएँ भी सुलझती गयीं।

29 नवम्बर को विवाह निश्चित हुआ। सभी कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर व्यवस्थाएँ भी बाँट लीं। कन्यादान की भी सुंदर व्यवस्था हो गयी। महिला मण्डल प्रताप विहार, कानपुर, बिजनौर के कार्यकर्त्ताओं का भी भरपूर सहयोग मिला। विवाह शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ।

भव्य समारोह नहीं, दिव्य संस्कार

हाटपीपल्या, देवास। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ हाटपीपल्या पर वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री गिरीशचंद्र गुरु की आत्मजा सौ.कां. सविता का मंगल परिणय चि. उमेश जोशी के साथ सम्पन्न हुआ। इसे भव्य समारोह नहीं, दिव्य संस्कार के रूप में प्रस्तुत करने के आदर्श प्रयास हुए।

• बिना दहेज-दिखावे के संस्कार हुआ। • उपहार के रूप में आयी धनराशि को देव संस्कृति महाविद्यालय के निर्माण के लिए समर्पित कर दी गयी। • सभी अतिथियों को युग साहित्य भेंट किया गया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी

गाँव-गाँव संगोष्ठियों से अभियान को दी जा रही है गति

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

महिला मण्डल जतारा ने अपने क्षेत्र में 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' आन्दोलन के व्यापक विस्तार के लिए गाँव-गाँव शिविर-संगोष्ठियों का अभियान चलाया है। इसके अंतर्गत ग्राम सतगुवां की गोष्ठी में 85 महिलाओं ने भाग लिया। शीलम गुप्ता, नम्रता सेन ने उन्हें श्रेष्ठ संतान की प्राप्ति के लिए संस्कार की महत्ता बतायी। इसके साथ नारी जागरण और सामाजिक जन-जागृति के विविध कार्यक्रमों की भी चर्चा की।

घर-घर, गाँव-गाँव तुलसी रोपण

जोबट, उदयगढ़, कठ्ठीवाड़ा, सोंडवा, अलीराजपुर, चंद्रशेखर आजाद नगर में लगाये 4000 पौधे

जोबट, अलीराजपुर। म.प्र.

युवा प्रकोष्ठ जोबट ने जोबट व आसपास के नगरों में तुलसी की पौध और युगऋषि का साहित्य घर-घर पहुँचाने का अभियान चलाया। ज्ञानरथ पर गायत्री माता व गुरुदेव-माताजी का चित्र स्थापित किया, एक हाथठेले पर तुलसी की पौध व साहित्य रखा और चल पड़े इन नगरों की गली-गली में घर-घर संपर्क करने। अकेले जोबट में 1200 और जिले में कुल 4000 घरों में तुलसी की पौध का विधि-विधान से पूजन कर उन्हें गमलों में रोपा गया। नगरवासियों को तुलसी आध्यात्मिक व स्वास्थ्यवर्धक गुणों की जानकारी दी गयी।

जिला संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौड़ के अनुसार 'हारिये न हिम्मत', 'आत्मविश्वास कैसे बढ़ायें', 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' जैसी पुस्तकों के प्रति लोगों में विशेष रुचि थी। सर्वश्री टीनू असोरिया, शिवराम वर्मा, शिवनारायण सक्सेना, सरदार निगवाल, रनजीत डाबर, जयंतीलाल वाणी, प्रखर राठौड़, रामप्रसाद भयडीया, रामसिंह चौहान, मुकाम सिंह आदि ने बड़ी श्रद्धा और मनोयोग से यह अभियान चलाया।

देव संस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ, जयपुर

देव संस्कृति पुष्टिकरण के लिए भागीरथी संकल्प उभरे

दीपयज्ञ की मनमोहक छटा : श्रद्धेया शैल जीजी डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी आरती की मंगलवेला में देव शक्तियों को नमन करते हुए

श्रद्धेया शैल जीजी के आगमन से युग सृजेताओं में छाया उल्लास

जयपुर। राजस्थान

अश्वमेध रजत जयंती समारोह शृंखला का अंतिम कार्यक्रम जयपुर में वीटी रोड मानसरोवर स्थित हाउसिंग बोर्ड मैदान पर 23 से 26 नवम्बर की तारीखों में आयोजित हुआ। इस महायज्ञ में आदरणीया शैल दीदी एवं डॉ. चिन्मय पंड्या जी देव संस्कृति दिग्विजय के संकल्प को साकार करने के लिए सर्वोच्च समर्पण करने को तत्पर युग सृजेताओं में नवचेतना का संचार करने शांतिकुंज से पहुँचे। कलशयात्रा, हवन, दीपयज्ञ, विचार गोष्ठी, संस्कार सहित विभिन्न कार्यक्रमों में जयपुर, सीकर, टौंक, दौसा, अलवर जिलों से आये हजारों भाई-बहनों ने युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के संकल्प लिये।

राज्य सरकार के चार मंत्री, विभिन्न आयोग के अध्यक्ष, माननीय न्यायाधीश सहित अनेक गणमान्यों ने अलग-अलग अवसरों पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज करवाई।

कलश यात्रा : कलशयात्रा में शामिल ग्यारह हजार से अधिक पीत वस्त्रधारी महिला-पुरुषों ने पूरे मानसरोवर को गायत्रीमय कर दिया। झांकियों और ज्ञान रथों के साथ अनुशासित ढंग से निकली कलशयात्रा को देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। दो स्थानों से कलश यात्राएँ आरंभ हुईं, मीरा पार्क में राजस्थान राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष सुमन शर्मा ने कलशों का पूजन कर यात्रा को रवाना किया।

इन्होंने संभाले रखी व्यवस्थाएं:

अखिल विश्व गायत्री परिवार राजस्थान जोन के प्रभारी अंबिका प्रसाद श्रीवास्तव, स्थानीय शांतिकुंज प्रतिनिधि ताराचंद पंवार, गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता वीरेंद्र प्रसाद अग्रवाल, सतीश भाटी, ओमप्रकाश अग्रवाल, नंदलाल कचोलिया, संजय गुप्ता, दीपक नंदी, भैंरूलाल जाट, रणवीर चौधरी, हर्ष मिश्रा, भक्तभूषण वर्मा, मनोज पारीक ने अलग-अलग व्यवस्थाओं में सहयोग किया।

- 1100 श्रद्धालुओं ने दीक्षा ली
- 11 लाख आहुतियाँ अर्पित कीं

श्री कालीचरण शर्मा एवं श्री दिनेश पटेल की टोली ने तीन दिनों में गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र और देव संस्कृति के पुष्टिकरण, वातावरण परिष्कार, पर्यावरण सरंक्षण, ऋषि परंपरा संवर्धन, संकट निवारण के लिए 11 लाख आहुतियाँ अर्पित करवाई।

- 3 वर्षीय कार्ययोजना के संकल्प
  - एक करोड़ पौधे लगायेंगे
  - तीस लाख देव परिवार बनायेंगे
  - हर गाँव में दस कार्यकर्त्ता बनायेंगे
- श्रद्धेया जीजी ने प्रज्ञापुंज एवं प्रज्ञापुत्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किये।

151 कुण्डीय यज्ञशाला में यज्ञ करते श्रद्धालु

देव संस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन संगोष्ठी

40 स्वयंसेवी संगठनों ने भाग लिया, मिलकर काम करने का आश्वासन मिला

गायत्री महायज्ञ के दूसरे दिन 24 नवम्बर को दोपहर को यज्ञ शाला परिसर में महंत मनोहरदास महाराज के सान्निध्य में देव संस्कृति पुष्टिकरण गोष्ठी एवं विभूति सम्मान समारोह हुआ। इसमें पीड़ित मानवता की सेवा में लगे भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, सेवा भारती सहित 40 से अधिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

श्री कालीचरण शर्मा ने इसे संबोधित करते हुए कहा कि आज आदमी धन कमाने में जितनी बुद्धि लगा रहा है, उतनी सेवा में लगाए तो यह युग बदल सकता है। आज ज्ञान की कमी है। इसी ज्ञान की कमी के कारण अनेक प्रकार के संकट मंडरा रहे हैं।

श्री घनश्याम पालीवाल ने गायत्री परिवार द्वारा अब तक किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। सभी संगठनों को गायत्री परिवार की गतिविधियों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। गायत्री परिवार की ओर से सभी संगठनों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। उन्होंने गायत्री परिवार के साथ मिलकर कार्य करने का विश्वास दिलाया। नदी स्वच्छता, वृक्षारोपण, नशामुक्ति जैसे अभियानों में सहभागिता के लिए उनमें विशेष रुचि दिखाई दी।

आदर्शों के प्रति आस्था का पोषण कर रहा है गायत्री परिवार

• डॉ. चिन्मय पण्ड्या

समाज का कल्याण केवल वही संगठन कर सकता है जो लोगों की आस्थाओं का पोषण कर सके। हमारी आस्था जीवन-आदर्शों के प्रति होनी चाहिए; अपने राष्ट्र, समाज संस्कृति पर होनी चाहिए, अपने सृजेता और अपनी सामर्थ्य पर होनी चाहिए। आस्था के पोषण का दायित्व मुख्य रूप से देवालयों पर होता है। उन्हें मात्र पूजा-पाठ के नहीं, जनजागरण के केन्द्र होना चाहिए। गायत्री परिवार यही कार्य कर रहा है। बाल संस्कार शालाएँ भी इस कार्य में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। बचपन से ही नैतिकता का पाठ पढ़ाना एक प्रकार से व्यक्ति को आदर्शों के साँचे में ढालना है, जिसका प्रभाव जीवनभर रहता है।

आत्मदेवता को जगाइये

• श्री कालीचरण शर्मा

मां गायत्री आत्म देवता को जगाने की प्रेरणा और शक्ति देती है। अनुदान और वरदान तो आत्मदेवता ही देते हैं।

संवेदनाओं के जागरण से होगा समस्त समस्याओं का समाधान

• श्रद्धेया शैल जीजी

आज समाज में जितनी भी समस्याएँ दिखाई देती हैं, उनका मूल कारण भाव संवेदनाओं का अभाव है। जिस समाज की संवेदनाएँ सूख जायें वह समाज कभी सुखी नहीं रह सकता। गायत्री उपासना वस्तुतः भाव संवेदनाओं के जागरण की ही साधना है। जिसकी संवेदना जाग जाय वह देवता बनता चला जाता है। देवता वह जो दूसरों के दुःख-दर्द को अपना समझे और उसके समाधान के लिए प्रयत्नशील रहे। गायत्री परिवार की यही विशेषता है।

रक्तदान शिविर

आयोजन स्थल पर तीनों दिन सवाई मानसिंह अस्पताल संतोकबा दुर्लभजी हॉस्पिटल और स्वास्थ्य कल्याण ब्लड बैंक के तीन मोबाइल यूनिटों में रक्तदान शिविर लगाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने रक्तदान किया।

निःशुल्क पौध वितरण

महायज्ञ में भाग लेने वाले व्यक्तियों को तरु प्रसाद के रूप में लगभग एक दर्जन विभिन्न प्रजातियों के पौधे निशुल्क उपलब्ध कराए गए। प्रभारी विष्णु गुप्ता ने बताया कि लोगों को आंवला, अमरूद, करुंदा, नींबू, पपीता, गुड़हल, टिकोमा, नागदून, पत्थरचट्टा, तुलसी, कचनार, मेहंदी जैसे विभिन्न पौधे तरु प्रसाद के रूप में निशुल्क उपलब्ध कराए गए।

आकर्षक प्रदर्शनी

प्रतापगढ़ से आए गायत्री परिजन कुलदीप सिंह राणावत ने यहां 10 X 10 के 40 फलैक्स पर प्रदर्शनी लगाई। वे 2011 से प्रदर्शनी लगा रहे हैं। इसमें महिला सशक्तीकरण का संदेश अत्यंत प्रभावशाली था। छोटी-सी प्रदर्शनी में गायत्री परिवार का समग्र परिचय देने के सुंदर प्रयास किये गये।

आदरणीया जीजी के संग बिताये गये अविस्मरणीय क्षण

दिवंगत हुई देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री यमुनादत्त शास्त्री, देवास। मध्य प्रदेश

शासकीय सेवाओं से मुक्त होने के पश्चात् शांतिकुंज में 14 वर्षों तक समयदान करने वाले संस्कृत के उद्भट विद्वान श्री यमुनादत्त शास्त्री ने 94 वर्ष की अवस्था में स्थूल देह त्याग गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में चिर विश्रांति प्राप्त की। 24 नवम्बर 2017 को अपने गृहनगर देवास में उनका निधन हुआ।

श्री यमुनादत्त शास्त्री प्रखर गायत्री उपासक थे। वे 1952 में मिशन से जुड़े, अपने क्षेत्र में परम पूज्य गुरुदेव के साथ बैलगाड़ियों में प्रचार-प्रसार के लिए गये।1992 में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में शांतिकुंज आ जाने के बाद वेद विभाग में उन्होंने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। संस्कृत अनुवाद एवं रचनाओं में उनका विशेष योगदान रहा। अश्वमेध यज्ञों के मंगलाचरण में उनके वेदवाणी के स्वर में अपना विशिष्ट प्रभाव डालते थे। स्वास्थ्य कारणोंवश वे सन् 2006 में धर्मपत्नी सहित गृहनगर देवास लौट गये थे।

स्व. श्री शास्त्री जी ने अपने पुत्र जितेन्द्र, योगेन्द्र एवं पौत्र गौरव, कृष्णमूर्ति को भी युग निर्माणी आस्था और सक्रियता के संस्कार विरासत में दिये हैं।

श्री आशुतोष चावला, करनाल। हरियाणा

गायत्री परिवार करनाल के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री हंसराज चावला के सुपुत्र आशुतोष चावला का 17 नवम्बर को 42 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। अपने पिता की तरह वे भी मिशन के लिए पूर्ण समर्पित और सक्रिय रहे।

महिला मण्डल द्वारा आयोजित 24 कुण्डीय श्रद्धा संवर्धन गायत्री महायज्ञ

धनबाद। झारखंड

विवाह भवन, बाबूडीह, धनबाद में 17 से 20 नवम्बर की तारीखों में आयोजित श्रद्धा संवर्धन 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ समाज के समक्ष नारी जागरण का जीता-जागता उदाहरण था। जिला महिला प्रकोष्ठ ने इसे आयोजित किया। शांतिकुंज की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली ने इसका संचालन किया तथा आमंत्रित अतिथि भी अधिकांश महिलाएँ ही थीं।

551 कलशों की विशाल शोभायात्रा का प्रथम पूजन एस. एस.एल.एन.टी. कॉलेज की प्राचार्या डॉ. मीना श्रीवास्तव, भा.को.को.लि. के महाप्रबंधक श्री राजपाल यादव (सपत्नीक) एवं डॉ. नूपुर चंदन, स्त्री रोग विशेषज्ञ ने किया। पाँच किलोमीटर लम्बी कलश यात्रा में 1200 महिला-पुरुष शामिल थे।

शांतिकुंज से पहुँची सुश्री दीना त्रिवेदी, नीलिमा सिंह, अनिता कांवड़कर, अंजना सोंडी की टोली ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने नारी उत्कर्ष के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के साथ सामाजिक विकास में नारी की हिस्सेदारी के विभिन्न पक्षों को बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत किया। दीक्षा, यज्ञोपवीत, मुण्डन, नामकरण, विद्यारंभ, जन्म दिवस, विवाह दिवस आदि संस्कार सैकड़ों की संख्या में हुए। अंतिम दिन तेनुघाट से जज महोदया श्रीमती नीरजा आश्री मुख्य रूप से उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम में आठों प्रखण्ड के 5000 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम आयोजन में श्रीमती रश्मि कपिला, श्रीमती प्रभा प्रसाद, ममता सिंह, उषा मिस्त्री, रश्मि कपिला, रेणु सिंह, मंजु सिंह, पूनम सिंह, स्वर्णलता देवी, सरोज सिन्हा, मालती केशरी, मंजु पंडित आदि का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

जीवन का उद्देश्य तभी पूर्ण होता है जब वह दूसरों को आनन्द देने में सफल हो। - माँ शारदामणि

राजसमंद की गलियों से गुजरती कलश यात्रा

दीपमहायज्ञ की मनमोहक छटा

दीक्षा-यज्ञोपवीत संस्कार कराते बटुक

देव संस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ, मेवाड़ (1 से 4 नवम्बर 2017)

मेवाड़ की आन, बान, शान की रक्षा की शपथ ली

राजसमंद में आयोजित देवसंस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन 251 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ ने मेवाड़ की गौरवशाली संस्कृति की याद दिला दी। कलेक्टर परिसर की भव्य यज्ञशाला में हल्दीघाटी अश्वमेध यज्ञ की फिज़ां दिखाई दे रही थी। अंतर इतना ही था कि पहले लाखों की भीड़ थी और अब संकल्पित साधक मेवाड़ की संस्कृति को फिर से बुलंद करने की शपथ ले रहे थे।

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से श्री केसरी कपिल जी एवं श्री दिनेश पटेल की टोली पहुँची थी। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि नीति, मर्यादा और संस्कृति की आन, बान, शान की रक्षा के लिए मेवाड़ के शूरवीरों का पराक्रम विश्ववन्द्य है। आज किसी क्षेत्र विशेष पर नहीं, सारी मानवता पर छाये संकट से रक्षा के लिए हमें वही पराक्रम फिर दोहराना है।

आज संघर्ष किसी व्यक्ति से नहीं, वृत्तियों से है। आवश्यकता समाज को भोगवादी संस्कृति, मूढ़ मान्यताओं, कुरीतियों से उबार कर त्याग और बलिदान की संस्कृति को पुनः प्रतिष्ठित करने की है। माता भगवती गायत्री की उपासना ही इसके लिए आवश्यक प्रेरणा और शक्ति प्रदान करेगी।

500 से अधिक लोगों ने समयदान का संकल्प लिया

कलेक्टर श्री पी.सी. बेरवाल एक स्वयंसेवक के रूप में प्रत्येक दिन कार्यक्रमों में उपस्थित रहे

21 विशिष्ट विभूतियों का सम्मान किया गया

इस महायज्ञ में 25 से 30 हजार लोगों ने आहुतियाँ प्रदान की। दो दिन में दीक्षा एवं अन्य संस्कार हजारों की संख्या में हुए।

कलश यात्रा :

प्रथम दिन प्रेरक झाँकियाँ, हजारों कलश, 108 वेद धारकों सहित कलश यात्रा निकली। 5000 नर-नारी शामिल हुए। बालकृष्ण स्टेडियम काँकरोली से पुष्टिमार्ग के तृतीय पीठाधीश्वर युवराज पू. वेदान्त राजा एवं नगर परिषद् सभापति ने कलशों का पूजन कर इसका शुभारंभ किया। यज्ञस्थल पर पहुँचने पर श्री हरिओम सिंह राठौड़ सांसद एवं जिला कलक्टर श्री पी. सी. बेरवाल ने किया ।

विभूतियों का सम्मान :

2 नवम्बर को देवसंस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन संगोष्ठी में मेवाड़ क्षेत्र के संत, महामण्डलेश्वर एवं संस्था-संगठनों के सूत्र पुरुषों ने भाग लिया। ध्यान योगी संत श्री शुभकरण जी महाराज का विशेष सान्निध्य रहा। सभी ने सृजन सेवा में गायत्री परिवार के साथ रहकर कार्य करने का आश्वासन दिया। 21 विभूतियों का सम्मान किया गया।

दीप महायज्ञ : तीन वर्षीय अनुयाज के संकल्प

माननीय श्री गुलाबचन्द कटारिया-गृहमंत्री राजस्थान, श्रीमती किरण माहेश्वरी उच्च शिक्षा मंत्री राजस्थान एवं श्री पीसी. बेरवाल जिला कलक्टर राजसमन्द की गरिमामय उपस्थित में दीप महायज्ञ सम्पन्न हुआ। 24000 प्रज्वलित दीपों की साक्षी में मेवाड़ घोषणा पत्र जारी किया, देवसंस्कृति पुष्टिकरण के लिए 3 वर्षीय अनुयाज के सामूहिक संकल्प लिये गये।

- ढाई लाख देव परिवार बनाना
- हर गाँव की प्रव्रज्या,
- हर गाँव में वृक्षारोपण,
- हर विद्यालय में भा. सं. ज्ञान परीक्षा
- नदियों के किनारे सघन वृक्षारोपण

मेवाड़-मंथन
3000 गाँव-कस्बों की प्रव्रज्या

इस महान यज्ञ के माध्यम से समस्त मेवाड़ (जिला-राजसमन्द, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा एवं पूर्वी पाली क्षेत्र) के गाँव-गाँव जाकर जनचेतना जगायी गयी। 3000 से अधिक ग्राम-कस्बों में गोष्ठी, यज्ञ, दीपयज्ञ जैसे कार्यक्रमों के साथ ग्राम प्रवृज्या हुई। इन सभी गाँवों में संकल्पि साधकों द्वारा मंत्रलेखन एवं चालीसा पाठ किये गये। 2000 से अधिक देवस्थानों की जल-रज का पूजन किया गया। 22 अक्टूबर को हुए यज्ञशाला के भूमि पूजन समारोह में इन देवस्थानों की पवित्र जल-रज को 31 कलशों में गाजे-बाजे के साथ लाया गया। जिला कलक्टर एवं संतों ने इसका भव्य स्वागत किया।

मातृशक्ति श्रद्धांजलि महापुरश्चरण
3000 गाँव-कस्बों की प्रव्रज्या

देव संस्कृति पुष्टिकरण अभियान के अंतर्गत पूरे राजस्थान में गाँव-गाँव, घर-घर शक्तिकलशों की स्थापना करायी जा रही है। इनके सान्निध्य में आगामी नौ वर्षों तक नौ-नौ दिवसीय सामूहिक साधना अनुष्ठान किये जायेंगे। हर नौ दिन के बाद शक्ति कलश नये घर ले जाया जायेगा।

राजसमंद के महायज्ञ में धनवन्तरी त्रयोदषी से दीपावली तक 2400 शक्ति कलषों की स्थापना सामूहिक जप एवं यज्ञीय वातावरण में की गई। इन्हें यज्ञोपरांत मेवाड़ के सभी जिलों के गाँव-गाँव में ले जाया गया। घर-घर सामूहिक साधना अनुष्ठान आरंभ हो गये।

देव संस्कृति दिग्दर्शन :

लोक आराधन प्रदर्शनी में युग निर्माण आन्दोलन के साथ मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास को दर्शाया गया था। इस क्षेत्र के शूरवीर, बलिदानी, वीरांगना देवियों, संस्कृति की रक्षा के लिए आत्मोत्सर्ग करने वाले बालकों और पशु-पक्षियों की वीरगाथा का इस प्रदर्शनी में सजीव चित्रण किया गया था।

राजसमन्द झील पर सामूहिक तर्पण

कार्तिक पूर्णिमा, 4 नवम्बर को राजसमंद झील के नौ चौकी पाल पर हजारों नर-नारियों ने एक साथ देव तर्पण, ऋषि तर्पण, प्रकृति तर्पण, पितृ तर्पण एवं शहीदों, धर्म-राष्ट्र के लिए दिवंगत हुतात्माओं के तर्पण किए ।

51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

नैतिकता, त्याग, परोपकार की संस्कृति को अपनायें

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने विविध मंचों से किया आह्वान

लखनऊ के आशियाना कथा पार्क सेक्टर-जे में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के आगमन ने इस महायज्ञ की गरिमा बढ़ा दी। उन्होंने अपने 8 एवं 9 दिसम्बर के लखनऊ प्रवास में यज्ञ के अलावा कुछ और कार्यक्रमों को भी संबोधित किया।

51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में

8 दिसम्बर की सायं उत्तर प्रदेश के विधानसभा, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित की मुख्य उपस्थिति में उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं को ऐसा आदर्श जीवन जीना चाहिए जिसे देखकर समाज प्रेरणा ले सके, यही समय की माँग है। उन्होंने याजकों से कहा कि यज्ञ त्याग और परमार्थ का देवता है। यज्ञ में आहुतियाँ समर्पित करते हुए जीवन को भोग विलास से बचाकर लोगमंगल में लगाने का संकल्प करना चाहिए।

इससे पूर्व डॉ. चिन्मय जी ने श्री हृदयनारायण दीक्षित जी का गायत्री मंत्र चादर उढ़ाकर भावभरा स्वागत किया। श्री दीक्षित जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गायत्री परिवार ने समाज को संस्कारवान वातावरण दिया है। आपका त्याग राष्ट्र की गौरव-गरिमा बढ़ायेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

283वीं वाङ्मय स्थापना

8 दिसम्बर को डॉ. चिन्मय जी द्वारा रामस्वरूप फैकल्टी ऑफ हूमैनिटीज़ एण्ड सोशल साइंस

विधानसभा अध्यक्ष को सम्मानित करते डॉ. चिन्मय जी

रामस्वरूप मेमोरियल यूनिवर्सिटी, लखनऊ के पुस्तकालय में युगऋषि के समग्र वाङ्मय की स्थापना की गयी। गायत्री ज्ञान मंदिर लखनऊ द्वारा चलाये गये अभियान के अंतर्गत यह 283वें पुस्तकालय में समग्र वाङ्मय सेट की स्थापना हुई। श्रीमती ऊषा सिंह ने अपने स्व. पति राजेन्द्र सिंह की स्मृति में यह साहित्य भेंट किया था। डॉ. नरेन्द्र देव ने 1000 पॉकेट बुक एवं श्री उमानंद शर्मा ने सभी संकाय सदस्यों को अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ भेंट कीं। डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने इस अवसर पर कहा कि मानवीय मूल्य के विकास के बिना शिक्षा अधूरी है। युगऋषि का यह साहित्य इस अधूरेपन को दूर कर जीवन की गरिमा का बोध करायेगा।

चिकित्सकों को मार्मिक संदेश दिया

के.जी.एम.यू. लखनऊ के सांइटिफिक कन्वेशन सेन्टर में कुलपति, वरिष्ठ चिकित्सक एवं चिकित्सा की शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र-छात्राओं के बीच डॉ. चिन्मय जी का उद्बोधन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत के जगद्गुरु एवं सोने की चिड़िया रहने पर हम सब गर्व करते हैं, लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि भारत ने ऋषियों की सेवा, प्रेम, त्याग की संस्कृति को अपनाकर ही यह गौरव हासिल किया था। उन्होंने अपने युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का संदेश देते हुए चिकित्सकों से पीड़ित मानवता की सेवा के लिए अपने समय, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश लगाने का अनुरोध चिकित्सकों से किया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वीसी सहित सभी विभागाध्यक्षों को गायत्री मंत्र का उपवस्त्र उढ़ाकर सम्मानित किया। सभी 600 श्रोताओं को युगऋषि का साहित्य भेंट किया गया। कुलपति जी ने प्रतीक चिन्ह भेंट देकर शांतिकुंज प्रतिनिधि का सम्मान किया। इस अवसर पर उन्होंने के.जी.एम.यू. परिसर में शांतिकुंज के सहयोग से नक्षत्र वाटिका लगाने की घोषणा की।

महायज्ञ के उल्लेखनीय प्रसंग

- यज्ञस्थल पर 2 से 9 दिसम्बर की तारीखों में युगऋषि के जीवन दर्शन पर प्रदर्शनी एवं पुस्तक मेला लगाया गया था।
- कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से श्री श्याम बिहारी दुबे की पाँच सदस्यीय टोली पहुँची थी। भारी मात्रा में नर-नारियों ने मानव एवं प्राणीमात्र के कल्याण तथा विश्व शान्ति की कामना के साथ आहुतियाँ समर्पित कीं, सभी संस्कार सम्पन्न कराये गये। कार्यकर्ता गोष्ठी हुई, सायंकालीन संगीत-प्रवचन के कार्यक्रमों ने हजारों लोगों में युगनिर्माणी आस्थाओं का संचार किया।
- **रक्तदान एवं देहदान :** एस.जी.पी.जी.आई. लखनऊ की देखरेख में यज्ञ परिसर में रक्तदान शिविर चला, जिसमें 24 लोगों ने रक्तदान किया। 38 लोगों ने मरणोपरान्त देहदान करने का संकल्प लिया।
- सर्वश्री अरविन्द निगम, अमरनाथ दुबे, उमानंद शर्मा, अशोक द्विवेदी, अनिल तिवारी, सुरेन्द्र सिंह, डॉ. आर.पी. गुप्ता, ललित दीक्षित, श्रीमती क्षमा गुप्ता, पूनम शर्मा, डॉ. एस.एन. सचान, के.के. श्रीवास्तव, अरूण श्रीवास्तव, माधुरी पाण्डेय, सुरेन्द्र बाबू प्रजापति, राहुल मिश्रा, शिवाकांत त्रिपाठी, ज्ञान श्रीवास्तव, आशुतोष सिंह तथा लखनऊ के आठों जोनों के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आत्म-कल्याण का मार्ग अत्यंत सरल है। मनुष्य की अनगढ़ आकांक्षाएँ ही इस मार्ग की प्रमुख बाधा है।

लोकमंगल के पथ पर बढ़ रहे युग सृजेताओं के साहसी कदम

दिव्य भारत संघ छत्तीसगढ़ ने छुआ मील का पत्थर

शैक्षणिक संस्थानों में डिवाइन वर्कशॉप आयोजन के निरंतर क्रम का 1000 वाँ कार्यक्रम

शाखा समन्वयक श्री पी.एल. साव 1000 वाँ डिवाइन वर्कशॉप को संबोधित करते हुए

भिलाई। छत्तीसगढ़

श्रीचंद्रा नर्सिंग कॉलेज, पुष्पक नगर के सभागार में 25 नवम्बर को दिया छत्तीसगढ़ द्वारा डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। 'युवाओ सृजन का समय आ गया, राष्ट्र जागरण का समय आ गया' के ओजस्वी स्वर गूँज रहे थे। यह अवसर विशेष था, ऐतिहासिक था। यह पिछले 5 वर्षों की सतत सक्रियता में एक मील का पत्थर था। दिव्य भारत संघ, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित यह 1000 वीं डिवाइन वर्कशॉप थी।

इस विशिष्ट कार्यशाला को संबोधित करने युवा प्रकोष्ठ, शांतिकुंज के प्रवक्ता श्री आशीष कुमार सिंह पहुँचे। उन्होंने उपस्थित कॉलेज के डायरेक्टर श्री मोहन चंद्राकर, समस्त स्टाफ, 500 छात्र-छात्राओं को वर्तमान परिस्थितियों में युवा जागरण की आवश्यकता और उसके विधि-विधान का बोध कराया। दिया, ओडिशा के श्री संतोष कुमार जेना ने अपने ओजस्वी क्रांति गीतों से श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर उपजोन भिलाई के समन्वयक श्री एस.पी. सिंह, धीरजलाल टांक, दिया, छ.ग. के संयोजक डॉ. पी.एल. साव एवं उनके प्रमुखसहयोगी डॉ. योगेन्द्र कुमार, इं. सौरभकांत, सर्वश्री रामस्वरूप साहू, लोकनाथ साहू, मोहन उमरे, अखिलेश हिरवानी, प्रेमकांत, पवन वर्मा, अंजना साहू, सुश्री तिलोत्तमा मुदली, सुमन, मधुलिका, श्रद्धा, विनीता, भुवनेश्वरी, श्रीमती उषा किरण, रूपाली गाँधी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन इं. युगल किशोर ने किया।

उपलब्धियाँ

- दिया छत्तीसगढ़ दुर्ग और आसपास के जिलों के शैक्षणिक संस्थानों में पिछले 5 वर्षों से सतत डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन कर रहा है।
- इनके माध्यम से 3,00,000 से अधिक विद्यार्थियों तक मिशन के विचार पहुँचाये गये।
- लगभग 4,000 युवाओं ने विविध रचनात्मक आन्दोलनों में भागीदारी की, युग निर्माण अभियान से जुड़े।
- ओडिशा प्रांत में भी इस प्रकार की कार्यशालाओं का आयोजन आरंभ किया गया।

मुख्य वक्ता श्री आशीष सिंह ने कहा :

भारतीय संस्कृति विश्ववंद्य है। भारत का विकास अपनी इसी संस्कृति की गौरव-गरिमा के अनुरूप होना चाहिए, जिसमें श्रद्धा है, संवेदना है, एक-दूसरे के लिए सहयोग एवं त्याग की भावना है। हम अपना ही नहीं, सारे विश्व का कल्याण, शांति और प्रगति चाहते हैं। दिव्य भारत संघ का ध्येय इन्हीं भावनाओं को पुनर्जीवित करना है। पश्चिमी संस्कृति के भ्रम और भटकावों से बचाकर युवा पीढ़ी को राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए समर्पित करना है।

वार्षिकोत्सव समाजसेवा के लिए निरंतर बढ़ते चरण

बाभनपुर, प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश

21 नवम्बर को अपने क्षेत्र में सेवा और संस्कारों के लिए सुप्रसिद्ध गायत्री प्रज्ञापीठ बाभनपुर में नवनिर्मित प्रवचन हॉल एवं यज्ञशाला का लोकार्पण हुआ। यह कार्यक्रम श्री आर.के. चतुर्वेदी-आईजी एवं श्री आर.टी. ओझा-पूर्व आईएएस के मुख्य आतिथ्य में 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के समानान्तर ही निःशुल्क चिकित्सा सेवाएँ चलती रहीं। डॉ. रमेश ओझा, डॉ. डी. आर सिंह, डॉ. सुभाष, डॉ. आर.पी. द्विवेदी, डॉ. सुधाकर सिंह, डॉ. पी.के. पाण्डेय की टीम ने इसके लिए अपनी भावभरी सेवाएँ प्रदान कीं। इस शिविर के लिए इंडियन मेडिकल एसोसिएशन सुल्तानपुर ने सुनने वाली 3 मशीनों सहित अनेक चिकित्सकीय उपकरण एवं दवाइयाँ निःशुल्क उपलब्ध कराये थे। इस अवसर पर अतिथियों ने प्रज्ञापीठ परिसर में सीता अशोक के पौधे भी रोपे। सर्वश्री जोखन तिवारी, इंद्रमणि यादव, अवनीश उपाध्याय, विनोद जायसवाल, महादेव दुबे आदि ने प्रज्ञापीठ को संस्कार केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए सेवा और समयदान देते रहने के संकल्प लिये।

इस कार्यक्रम के संचालन के लिए शांतिकुंज से डॉ. ओ.पी.शर्मा, डॉ. गायत्री शर्मा, श्री गणेश पँवार की टीम पहुँची थी। उल्लेखनीय है कि बाभनपुर डॉ. ओ.पी. शर्मा की जन्मभूमि है। उनके परिवार ने ही लोकमंगल की भावना के साथ अपने पैत्रिक आवास को प्रज्ञापीठ के रूप में विकसित किया है और इसके विकास-विस्तार के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

नया चिंतन, नई दिशाएँ देतीं प्रगतिशील कथाएँ

खेरालु, महेसाणा। गुजरात

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित श्रीराम कथा की प्रबल प्रेरणा पुस्तक के आधार पर श्रीराम कथा का आयोजन करते हुए खेरालु शाखा ने 32 गाँवों में सत्प्रेरणाओं का संचार किया। 27 अक्टूबर से 4 नवम्बर तक चली कथा के परिणाम स्वरूप ऐसे 7 गाँवों में प्रार्थना केन्द्रों की स्थापना हुई, जो मिशन से अब तक अछूते ही थे।

पूर्णाहुति 31 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई। वहाँ लगाये गये पुस्तक मेले के माध्यम से डेढ़ लाख से अधिक रुपयों का साहित्य घर-घर पहुँचाया जा सका। 400 घरों में देवस्थापना हुई, 2000 लोगों ने दीक्षा ली।

फैज़ाबाद। उत्तर प्रदेश

सिद्धपीठ हनुमान गढ़ी फैज़ाबाद में 16 से 18 नवम्बर की तारीखों में सम्पन्न श्रद्धा सम्वर्धन 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ ने पूरे नगर में नवचेतना का संचार कर दिया। लोगों में प्रज्ञा पुराण कथा के प्रति असीम आस्था दिखाई दी। इस कार्यक्रम ने फैज़ाबाद जिले में गायत्री परिवार के संगठन को नवजीवन प्रदान किया है। जिले में 60 नये युवा मण्डल, 60 प्रज्ञा मण्डल और 60 महिला मण्डल बनाने का संकल्प लिया गया है।

उत्तर प्रदेश को नशामुक्त कराने की माँग

लखीमपुर के युवाओं ने चलाया हस्ताक्षर अभियान

लखीमपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर खीरी ने प्रदेश को नशामुक्त करने के प्रांतीय संगठन के विशेष अभियान के अंतर्गत अपनी विशिष्ट भागीदारी के प्रयास तेज कर दिये हैं। युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री अनुराग मौर्य के अनुसार आगामी 24 एवं 25 फरवरी को गायत्री परिवार का युवा प्रांतीय संगठन राजधानी लखनऊ में एक विशाल नशा मुक्ति रैली का आयोजन करने जा रहा है। इसमें प्रदेश को नशामुक्त घोषित करने के लिए एक करोड़ लोगों के हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन मुख्यमंत्री जी को सौंपने का लक्ष्य रखा गया है। श्री अनुराग मौर्य ने अपने जिले से 5,00,000 लोगों के हस्ताक्षर कराने का संकल्प लिया है।

जिले में 4 दिसम्बर से अभियान को तीव्र गति दी जा रही है। इसके लिये विद्यालयों से संपर्क कर विशेष सहयोग लिया जा रहा है। उन विद्यालयों के बच्चों के हस्ताक्षर कराने के साथ बच्चों को अपने घर के आसपास संपर्क कर पाँच-पाँच, दस-दस लोगों के हस्ताक्षर कराने का निवेदन किया जा रहा है। इस कार्य में विद्यालयों के शिक्षकों का भी भरपूर सहयोग मिल रहा है।

अभियान का शुभारंभ 4 दिसम्बर को कुंवर खुशवंतराय इंटर कॉलेज से हुआ। अगले दिनों भगवानदीन आर्य कन्या इंटर कॉलेज, डॉ. भीमराव अंबेडकर इंटर कॉलेज, कमलापुर, पं. दीनदयाल उपाध्याय विद्या मंदिर इंटर कॉलेज सी बी एस ई बोर्ड, पं. दीनदयाल उपाध्याय विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, यूपी बोर्ड में सभा कर शिक्षक-विद्यार्थियों के हस्ताक्षर कराये गये। प्रदेश को नशामुक्त घोषित करने की माँग वाले पत्रकों पर प्रतिदिन 2000 से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराये जा रहे हैं।

अश्वमेध गायत्री महायज्ञ

5 से 8 जनवरी 2018 :: मंगलगिरि, अमरावती (विजयवाड़ा), आंध्र प्रदेश

दक्षिण भारत में अश्वमेध यज्ञों की शृंखला का पाँचवा अश्वमेध गायत्री महायज्ञ मंगलगिरि में हो रहा है। सभी से अनुरोध है कि पूर्व कार्यक्रमों की भाँति साधना, साधन, समयदान या अंशदान कर इस महायज्ञ में अपनी भागीदारी अवश्य सुनिश्चित करें।

यज्ञ में भाग लेने जा रहे परिजनों के लिए महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ

- जगह नयी है, व्यवस्थाएँ सीमित हैं।
- सभी के ठहरने की व्यवस्था टेण्ट में ही रहेगी।
- छोटे बच्चे, बुजुर्ग और बीमार लोगों को लेकर न जायें।
- सर्दी के दिन हैं, ओढ़ने-बिछाने का साधन साथ ले जायें।

सम्पर्क सूत्र

Phone : 9258369473, 9446636542
E-mail : mangalagiri 2018@gmail.com
Address : ASHWAMEDHA OFFICE
305, Sai Bharati's Whitefields Apartment, Back Side of NRI Hospital, Chinnakakani, Mangalagiri 522503 Guntur -District (AP)
Ph.: 9030744237

यज्ञ के निमित्त अपना अंशदान नकद, चेक या ड्राफ्ट से निम्न खाते में जमा करायें। उसकी पे-इन स्लिप की कॉपी पर 'मंगलगिरि अश्वमेध के लिए' लिखकर ई-मेल से भेज दें।
Shri Ved mata Gayatri Trust
Haridwar
SBI A/c : 10876858311
IFC - SBIN0002350
Axis A/c : 156010100013846
IFC Code : UTIB0000156

कैसे पहुँचें?

विजयवाड़ा रेलवे स्टेशन से **बस नं. 47 V** में बैठें। यह विजयवाड़ा से मंगलगिरि होते हुए गुण्टूर जाती है। एन.आर.आई. बस स्टैण्ड पर उतरें। सर्विस ऑटो चार्ज ₹ 30/-

दंत चिकित्सा शिविर

1000 विद्यार्थियों का नि:शुल्क परीक्षण किया

विक्रोली, मुम्बई। महाराष्ट्र : दिया, मुम्बई के चिकित्सक समूह ने 7 दिसम्बर को अग्रसेन हिन्दी विद्यालय, विक्रोली में निःशुल्क दंत चिकित्सा शिविर आयोजित किया। राजकीय दंत महाविद्यालय के सहयोग से आयोजित इस शिविर में 10 चिकित्सकों ने निःस्वार्थ सेवाएँ प्रदान करते हुए विद्यालय के 1000 ये अधिक बच्चों का परीक्षण किया, उन्हें दाँतों की रक्षा के उपाय बताये। डॉ. सुभाष प्रजापति ने आवश्यक व्यवस्थाएँ बनायीं। डॉ. कविता मानेक ने चिकित्सकों को युगसाहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

शक्तिपीठ पर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाचनालय का शुभारंभ

ओसियां। जोधपुर

युवा क्रांति वर्ष के उपलक्ष्य में गायत्री शक्तिपीठ ओसियां पर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाचनालय की स्थापना की गयी है। मंसिफ मजिस्ट्रेट श्री विकास गजराज ने नगर के अनेक गणमान्यों की उपस्थिति में इसका शुभारंभ किया। उन्होंने तथा तहसीलदार श्री दीपक सांखला ने इस अवसर पर विश्वास व्यक्त किया कि युगऋषि द्वारा रचित यह उत्कृष्ट साहित्य युवा-बुजुर्ग, नर-नारी सभी को भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्वों के साथ उसके उदात्त आदर्शों का परिचय करायेगा, उन्हें अपना कर जीवन के महानता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करेगा। गायत्री परिवार की ओर से श्री भगवानदास राठी ने इसके उद्देश्य और गुरुदेव के विचारों की सामर्थ्य पर प्रकाश डाला।

वाचनालय के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित नगर के गणमान्य

अच्छाइयों को अपनाना कठिन नहीं है, कठिन है बुराइयों से पीछा छुड़ाना। अपना ध्यान अच्छाइयों पर ही केन्द्रित रखो ताकि बुराइयों को आपका स्पर्श करने का अवसर ही न मिले।

अवसर पहचानें, संभावनाओं को साकार करें

नागपुर में राष्ट्रीय युवा सम्मेलन से पूर्व डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का विशिष्ट विभूतियों से आह्वान

26 एवं 27 जनवरी 2018 की तारीखों में नागपुर में सम्पन्न होने जा रहे 'युवा क्रांति वर्ष 2017-2018' के समापन समारोह के प्रति पूरे देश में जबरदस्त उत्साह दिखाई दे रहा है। देश के कोने-कोने में युवा क्रान्ति का संदेश दे रहे 'युवा क्रान्ति रथ' जहाँ भी जाते हैं वहाँ लोगों में नयी उमंग और उत्साह का संचार कर रहे हैं। देश की विकास यात्रा में एक ऐतिहासिक अध्याय लिखने जा रहे इस कार्यक्रम की नागपुर भी बड़े उत्साह के साथ प्रतीक्षा कर रहा है। डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय के नागपुर प्रवास में इसकी बानगी स्पष्ट दिखाई दी।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या नागपुर विश्वविद्यालय में प्रबुद्ध जनों को संबोधित करते हुए

नागपुर। महाराष्ट्र

डॉ. चिन्मय पण्ड्या नागपुर के प्रबुद्ध नागरिकों एवं राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े विद्यार्थियों के लिए आयोजित सेमीनार के मुख्य वक्ता थे। 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर आयोजित यह सेमीनार डॉ. वसंतराव देशपांडे सभागार, सिविल लाइन्स में में 28 नवम्बर 2017 को आयोजित हुई। नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एस.पी. काणे इसके मुख्य अतिथि और कुलसचिव श्री पूरण मेश्राम विशिष्ट अतिथि थे। प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थान, भारत सरकार के उपक्रमों, शासकीय, अर्धशासकीय निकायों, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के विद्वानों, सामाजिक संगठनों, एनएसएस, सीआईएसएफ, नीरी आदि संस्थानों के गणमान्यों ने सेमीनार का लाभ लिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा नायक डॉ. चिन्मय जी ने अपने उद्बोधन में हर व्यक्ति में विद्यमान दिव्य संभावनाओं की बड़ी प्रभावशाली चर्चा की। उन्होंने कहा कि इन संभावनाओं को साकार करने के अवसर हर किसी के पास आते हैं। जो अवसर को पहचान लेते हैं वे स्वयं उत्कृष्ट जीवन जीते और अन्य सैकड़ों-हजारों के पथ प्रदर्शक-मार्गदर्शक बनते हैं। ऐसे ही लोग महापुरुष कहलाते और इतिहास के पन्नों पर अमर होते देखे जाते हैं। शेष तो पेट-प्रजनन प्रधान पशुवत जीवन जीते और अपने ही दुःखों का रोना रोते देखे जाते हैं।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने परिवर्तन की वर्तमान वेला को ऐसा ही एक दिव्य अवसर बताया। उन्होंने युग सृजेताओं से साहसपूर्वक आगे आने और सूक्ष्म जगत के दिव्य अनुदानों का लाभ उठाने का आह्वान किया।

कार्यकर्त्ताओं को संदेश

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का प्रथम कार्यक्रम गायत्री शक्तिपीठ नागपुर पर 'दिया' नागपुर के नव प्रवेशी बच्चों के बीच था। बच्चों ने उनसे अपनी जिज्ञासाओं के समाधान प्राप्त किये। मिशनरी कार्य एवं दैनंदिन कार्यों के बीच सामंजस्य कैसे बिठाया जाय।

द्वितीय कार्यक्रम महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से आये कार्यकर्ताओं के बीच था। परम पूज्य गुरुदेव के मार्मिक संस्मरणों के माध्यम से अभिभूत करते हुए उन्हें युग सृजेता सृजन संकल्प समारोह को 'न भूतो न भविष्यति' बनाने की प्रेरणा दी।

ग्रामोत्कर्ष-2017

दिया, राजस्थान के अभिनव प्रयासों को लेकर आयोजित हुई प्रांतीय कार्यशाला

मुख्य वक्ता : डॉ. डीपी सिंह- ग्राम प्रबंधन प्रकोष्ठ प्रभारी देसंविवि, जलपुरुष श्री राजेन्द्र सिंह (मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त), श्री पोपट राव पंवार-सरपंच आदर्श ग्राम हिवरे बाजार, श्री सुनील मानसिंगका प्रमुख गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र

जैसलमेर। राजस्थान

'दिया' राजस्थान द्वारा जैसलमेर में 9 से 11 नवम्बर की तारीखों में आयोजित वार्षिक प्रांतीय सम्मेलन का 'ग्रामोत्कर्ष 2017' आयोजित किया गया। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त कर चुके कई महानुभावों की कार्यक्रम में भागीदारी रही। उनकी प्रेरणा और गायत्री परिवार की योजनाओं से प्रभावित होकर क्षेत्र के छः गाँवों-खींया, सुल्ताना, लखा, लुणा, डागरी और गेराजा के प्रतिनिधियों द्वारा अपने गाँव के आदर्श विकास का संकल्प लिया जाना सम्मेलन की महान उपलब्धि रही। दिया के प्रांतीय संगठन ने प्रदेश के 200 गाँवों में इस योजना को लागू करने का लक्ष्य रखा है।

200 गाँवों में आदर्श ग्राम योजना आरंभ करने का है लक्ष्य

छः गाँवों के लोगों ने योजना तत्काल लागू करने के संकल्प लिये

तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ क्रांतिकारी सर्वसमाज जनचेतना रैली के साथ हुआ। स्थानीय विधायक श्री छोटू सिंह व नगर के गणमान्यों ने इसका नेतृत्व किया। पहली बार जैसलमेर के सभी समाज, वर्ग, संगठन ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल के नीचे दिखाई दिये। मंगल कलशों के साथ ऊँटों पर महापुरुषों की सजीव झाँकी, सप्त आन्दोलनों की झाँकी से सजी थी यह रैली।

अगले दिन सायं राष्ट्र जागरण महिला सशक्तिकरण दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें जिला प्रमुख श्रीमती अंजना मेघवाल, नगर परिषद अध्यक्ष श्रीमती कविता खत्री मुख्य रूप से सम्मिलित थी। इस अवसर पर उन महिलाओ को विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिन्होने कठिन परिस्थितियों से लड़कर अपनी बेटियों को शिक्षित कर समाज में उच्च स्थान पर पहुचाया है।

11 नवम्बर को आयोजित मुख्य कार्यक्रम की विषयवस्तु थी 'आओ चले गाँव की ओर'। सम्मेलन में स्थानीय विधायक, जिला प्रमुख , नगर परिषद अध्यक्ष, शहर के प्रबुद्ध नागरिकों सहित क्षेत्र के 150 गाँवों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। शांतिकुंज में ग्राम प्रबंधन प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. डी.पी. सिंह, मैग्सेसे सम्मान प्राप्त श्री राजेन्द्र सिंह, सुप्रसिद्ध आदर्श ग्राम हिवरे बाज़ार के सरपंच पोपट राव पंवार, गो विज्ञान अनुसंधान केन्द्र, नागपुर के प्रमुख श्री सुनील मानसिंगका तथा गायत्री परिवार के राजस्थान ज़ोन प्रभारी श्री घनश्याम पालीवाल ने मुख्य रूप से उनका मार्गदर्शन किया।

डॉ. डी.पी. सिंह ने केंचुआ पालन, मधुमक्खी पालन जैसे उद्योगों के लिए जैसलमेर क्षेत्र को उपयुक्त बताया। श्री राजेन्द्र सिंह ने मरू क्षेत्र में जल संरक्षण एवं अन्य छोटी-छोटी योजनाओं की चर्चा की। श्री पोपट राव पंवार ने ग्राम स्वराज के मूल स्वरूप से अवगत कराते हुए अपने अनुभव सांझा किये। श्री सुनिल मानसिंगका ने कहा कि गो सरंक्षण के बिना आदर्श गांव की कल्पना भी असम्भव है।

दिया, राजस्थान के संयोजक ने अपनी योजनाएँ स्पष्ट करते हुए परस्पर सहयोग एवं सहकार से 200 गाँवों में ग्राम विकास योजना आरंभ करने की इच्छा व्यक्त की। खींया, सुल्ताना, लखा, लुणा, डांगरी, गेराजा के प्रतिनिधियो ने प्रशंसनीय पहल करते हुए योजना को तत्काल प्रभाव से आरंभ करने के संकल्प लिये।

डॉ. साहब का वीडियो संदेश

शांतिकुंज से आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इसके लिए अपना वीडियो संदेश प्रेषित किया था। उन्होंने अपने संदेश में गाँव की समस्याएँ गाँवों में ही सुलझाने, बाल विवाह, दहेज, पर्दाप्रथा जैसी कुप्रथाएँ दूर करने, प्रौढ़ महिलाओं को साक्षर एवं युवाओं को स्वावलम्बी बनाने पर विशेष बल दिया।

योजना के सूत्रधार युवाओं की टोली

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, दिल्ली में आयोजित हुआ

नये ज़ोन राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का प्रथम युवा सम्मेलन

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

26 नवम्बर को दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के वेटलिफ्टिंग ऑडिटोरियम में 'युवा उत्कर्ष सम्मेलन' आयोजित हुआ। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, श्री कालीचरण शर्मा जी, डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इसे संबोधित किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के संकल्पों को पूरा करने में प्राणपन से जुटे सैकड़ों युवाओं की सक्रियता की भरपूर सराहना की, साथ ही क्षेत्र के विस्तार और समय की माँग को देखते हुए इस सक्रियता को कई गुना बढ़ाने और प्रभावशाली बनाने के लिए सृजनशील मानसिकता वाले युवाओं को संगठित होने का संदेश भी दिया।

मिशन में युवा रक्त की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित यह कार्यक्रम बहुत उत्साहवर्धक था। लगभग 2500 व्यक्तियों की क्षमता वाला सभागार पूरी तरह से भरा हुआ था। प्रत्येक जिले/शाखा के औसतन 200 परिजनों ने इसमें भाग लिया। माननीय श्री ए.एस. जयचन्द्रा, डिस्ट्रिक्ट एवं सेशन जज शाहदरा, दिल्ली की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का विशेष संचालन एन.सी.आर. ज़ोन प्रभारी श्री प्रदीप राव जी ने किया। शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री जमुना प्रसाद साहू, श्री जयराम मोटलानी एवं श्री आर. एन. सिंह जी, व्यवस्थापक गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा की कार्यक्रम की सफलता में विशेष भूमिका रही। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लगभग 50 प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने इस कार्यक्रम की सफलता के लिए अथक परिश्रम किया था।

जहाँ जवानी जाती है, जमाना वहीं जाता है।
आद. श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी
हम युग बदलना चाहते हैं तो युवाओं को पूरी समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के साथ जीवन में सत्य, प्रेम, त्याग, परोपकार जैसे आदर्शों को अपनाना चाहिए, क्योंकि जहाँ जवानी जाती है, जमाना उधर ही जाता है।

गायत्री मंत्र मन का जीपीएस है।
डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी
गायत्री मंत्र मन का जीपीएस है। जब मन भटक जाता है तो उसे सही मार्ग पर वापस लाने का काम गायत्री मंत्र करता है।

युवाओं को जीने का उद्देश्य तलाशना चाहिए
श्री कालीचरण शर्मा जी
जीवन परमात्मा का सर्वोत्तम उपहार है। युवाशक्ति को उसे जीने का सही उद्देश्य तलाशना चाहिए।

विशिष्ट झलकियाँ :

- लगभग 1 वर्ष पूर्व दिल्ली के 11 जिले और गुड़गाँव, गाज़ियाबाद, गौतमबुद्ध नगर और फरीदाबाद को मिलाकर बने एन.सी.आर. जोन का यह पहला विशाल समारोह था।
- मिशन में युवा रक्त की भागीदारी बढ़ाने के लक्ष्य के साथ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं को अपने बेटे-बहू, बेटी-दामाद के साथ आने का आह्वान किया था। ऐसा हुआ भी। वरिष्ठ शांतिकुंज प्रतिनिधियों के संदेश से प्रभावित युवाओं ने मिशन में अपने सक्रिय योगदान के संकल्प भी लिये।
- श्री विनय कुमार एवं श्री नीटू राघव के नेतृत्व में नुक्कड़ नाटक प्रदर्शित किया गया था, जिसमें दहेज, व्यसन, अशिक्षा जैसी कुरीतियों को रोकने और सकारात्मक सोच के साथ राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में सक्रिय होने की प्रेरणा दी थी।

नवयुगदल टाटानगर का दो दिवसीय यूथ एक्सपो

जमशेदपुर। झारखंड

नवयुग दल टाटानगर ने दो दिवसीय यूथ एक्पो का आयोजन किया। इसके अंतर्गत प्रथम दिन खास महल स्थित श्यामा प्रसाद इ. कॉलेज, ग्रेजुएट कॉलेज, साकची, मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों को युवा जाग्रति का संदेश दिया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के स्नातक श्री अवनीश कुमार एवं श्री सुरेश यादव ने सुसंस्कृत, समाजोपयोगी, तनावमुक्त और स्वावलम्बी जीवन जीने की मार्मिक प्रेरणाएँ दी। बच्चों को स्मरण शक्ति बढ़ाने, स्वस्थ जीवन जीने के सूत्र भी समझाये गये। यह सम्मेलन नागपुर में आयोजित हो रहे राष्ट्रीय युग सृजेता युवा संकल्प समारोह के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने की दृष्टि से अत्यंत उपलब्धिपूर्ण सिद्ध हुए।

सच्चाई और ईमानदारी के ईंट-गारे से बनी हुई जीवन की इमारत तेज तूफानों-झंझावातों में भी दृढ़ता से खड़ी रहती है।

प.वं. माताजी की जन्म शताब्दी तक छत्तीसगढ़ को बनायेंगे 'युग निर्माण प्रदेश'

प्रांतीय सृजनशील युवा सम्मेलन, बिलासपुर में उभरा प्रदेश के युगसृजेताओं का संकल्प

भारत मात्र भौगोलिक सीमा नहीं है, एक संस्कृति है, एक सोच है जिसमें सारे विश्व का कल्याण निहित है। भारत का उत्कर्ष मात्र कुछ लोग या समुदाय विशेष के उत्थान से संभव नहीं है। इसके लिए हमें अपनी मूल संस्कृति को पुनर्जीवित कर पूरे समाज का उत्थान करना है। इस महान कार्य को पूरा करने के लिए हम सबको अपनी-अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

30 नवम्बर से 03 दिसम्बर की तारीखों में बिलासपुर में आयोजित प्रांतीय सृजनशील युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने यह संदेश दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्ति किया कि जिस श्रद्धा और उत्साह के साथ छत्तीसगढ़ के युवा विभिन्न आन्दोलनों को गति दे रहे हैं, उसे देखते हुए परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी-2026 तक पूरे छत्तीसगढ़ को 'युग निर्माण प्रदेश' के रूप में विकसित करने में सफलता अवश्य मिलेगी।

चार दिवसीय सम्मेलन में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के अलावा जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा जी, दक्षिण पूर्व जोन प्रभारी श्री गंगाधर चौधरी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे जी, श्री आशीष सिंह, श्री पूरन चंद्राकर से विशिष्ट मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों के संदर्भ में विषय विशेषज्ञों ने प्रेरणा एवं प्रशिक्षण दिया। इस क्रम में श्री योगेन्द्र गिरि ने जल संरक्षण पर, श्री ओमप्रकाश राठौर ने युवा जागृति अभियान पर, डॉ. कुंती साहू ने नारी जागरण विषय पर कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया।

वाहन रैली : सम्मेलन का शुभारंभ 30 नवम्बर को 200 लोगों द्वारा निकाली गयी बाइक रैली से हुआ। इसे माननीय श्री किशोर राय, महापौर बिलासपुर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। बाइक सवार पीले पहने हैल्मेट थे, हर बाइक पर पीले झण्डे लगे थे। यह रैली गायत्री शक्तिपीठ के निकट सीएमडी.चौक से प्रारंभ होकर कार्यक्रम स्थल बहतराई स्टेडियम पहुँची। वहाँ शंखध्वनि व आरती उतारकर रैली का स्वागत किया गया।

मंच से डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी विदाई सत्र में प्रज्वलित मशालों की साक्षी में छत्तीसगढ़ की तरुणाई को भावी सक्रियता के संकल्प दिलाते हुए

सांस्कृतिक कार्यक्रम : सृजन चेतना विस्तार का अत्यंत प्रभावशाली आयाम है 'लोकरंजन से लोकमंगल'। इसका प्रदर्शन 30 नवम्बर को संध्याकाल हुआ। 14 जिलों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से स्वच्छता अभियान, ग्रामीण विकास, भ्रष्टाचार उन्मूलन, व्यसन मुक्ति आदि आंदोलनों का संदेश दिया। 1 एवं 2 नवम्बर की प्रातः देव संस्कृति विद्यालय चिल्हाटी, बिलासपुर के 40 बालक-बालिकाओं के द्वारा योग आसनों का प्रदर्शन किया।

प्रांतीय प्रतिवेदन – संगठनात्मक प्रतिवेदन जोनल प्रभारी श्री दिलीप पाणिग्रही एवं रचनात्मक प्रतिवेदन युवा प्रकोष्ठ के प्रांतीय सदस्य श्री सुरेन्द्र गुप्ता ने प्रस्तुत किया।

दीपयज्ञ : समापन दिवस की पूर्व संध्या पर मनमोहक दीपयज्ञ आयोजित हुआ। शुभाकृतियों में सजाये 5100 दीपकों की रोशनी से पूरा स्टेडियम परिसर जगमगाया उठा।

मशाल की साक्षी में लिए संकल्प

3 दिसम्बर को 6 कन्याओं एवं 6 युवाओं द्वारा प्रज्वलित मशाल की साक्षी में उपस्थित हजारों युवाओं ने सामूहिक संकल्प लिये। डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें आत्म परिष्कार की साधना को निरंतर प्रखर बनाते हुए छत्तीसगढ़ में चल रहे वृक्ष गंगा अभियान, निर्मल गंगा जन अभियान, आदर्श ग्राम, श्रीराम सरोवर, बाल संस्कार शाला, व्यसनमुक्ति, युवा जागृति आदि अभियानों को निरंतर गति प्रदान करते रहने के संकल्प दिलाये।

संपत्ति नहीं, विरासत बचाने के लिए मेहनत करें • डॉ. चिन्मय पण्ड्या

"• हम सभी का प्रयास इस देश को फिर से शिखर तक पहुँचाने का होना चाहिए। इसके लिए हमें अपनी समृद्ध विरासत को बचाना एवं घर-घर पहुँचाना होगा। संस्कार व संस्कृति हमारी विरासत है।

• आज का युवा विरासत बचाने के लिए नहीं, संपत्ति बनाने के लिए ज्यादा मेहनत कर रहा है।

• युवाओं को अपने चिंतन को बदलने की जरूरत है। संस्कृति है वहाँ सुख है। जहाँ सम्पत्ति है पर संस्कृति नहीं वहाँ पतन है, प्रगति नहीं।

• युवाओं को अपने अंदर के अंधकार को दूर करने के लिए अंदर ही ज्योति जलानी होगी। इस कार्य के लिए निरंतरता, धैर्य, संकल्प एवं भगवान के प्रति श्रद्धा की आवश्यकता है।

युवा ही उठा सकते हैं क्रान्तिकारी कदम • श्री कालीचरण शर्मा

"युवाओं को रोटी नहीं, जीने का मकसद तलाशना चाहिए। उनमें देश में व्याप्त असमानता, रूढ़ियाँ, अशिक्षा व आसपास जो गड़बड़ियाँ हो रही हैं, उसके खिलाफ बगावत का जज़्बा होना चाहिए। इतिहास गवाह है कि क्रांतिकारी कदम युवा ही उठा सकते हैं।

भारत युवा देश : संयोग नहीं, ईश्वर की इच्छा है • श्री के.पी. दुबे

"भारत वसुधैव कुटुंबकम् की भावना से संसार के हित में सोचता व करता है। अतः भारत की युवा शक्ति न केवल राष्ट्र-शक्ति ही नहीं, विश्व-शक्ति भी है। भारत का युवा होना मात्र संयोग नहीं, ईश्वर की इच्छा है, क्योंकि संसार के अन्य देश युवा होने से उसकी शक्ति विस्तारवादी, आतंकवादी एवं विध्वंसक गतिविधियों में लगती, जबकि भारत की युवाशक्ति विश्व के नवनिर्माण में लग रही है।

गुरुदेव के अंग-अवयव बनकर काम करें • श्री गंगाधर चौधरी

"छत्तीसगढ़ के सरल हृदय लोगों को पूज्यवर का असाधारण प्यार और अनुदान मिला है। मिशन के आरंभ से लेकर अब तक युग निर्माण योजना के विस्तार में यहाँ के लोगों की उल्लेखनीय भूमिका रही है। मैं प्रदेश के नौजवानों का आह्वान करता हूँ कि वे पूज्य गुरूदेव के अंग-अवयव बनकर चुनौतियों का डटकर सामना करें, सफलता निश्चित मिलेगी।

समूह चर्चा के निष्कर्ष

991 नये मंडल बनायेंगे
285 प्रज्ञा मंदिरों की स्थापना
077 स्थानों पर कार्यकर्ता प्रशिक्षण
989 स्थानों पर व्यसनमुक्त आन्दोलन
169 महाविद्यालयों में व्यक्तित्व परिष्कार शिविर
050 शक्तिपीठों पर नारी जागरण सत्र
048 साइकिल तीर्थ यात्राएँ तथा अखण्ड ज्योति की पाठक संख्या, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में विद्यार्थियों की संख्या, बाल संस्कार शालाओं की संख्या दो गुनी करने के संकल्प लिये गये।

विजन 2026

मिशन की दृष्टि से छत्तीसगढ़ का समग्र विकास उसे पूर्ण युग निर्माण प्रदेश बनाने के लक्ष्य के साथ 'विजन 2026' तैयार किया गया है। राष्ट्रीय युवा दिवस-12 जनवरी 2018 को सभी जिला मुख्यालयों में इसकी घोषणा की जायेगी, संकल्प लिये जायेंगे।

सृजनशील युवाओं और होनहार प्रतिभाओं का सम्मान

केन्द्रीय प्रतिनिधियों ने युग निर्माण आन्दोलन के विविध क्षेत्रों में सर्वोत्तम योगदान देने वाले कार्यकर्त्ताओं एवं शाखाओं को सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त डॉ. चिन्मय जी ने हायर सेकेण्ड्री स्कूल के ऐसे छः विद्यार्थियों को भी मोमेण्टों एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया, जिन्होंने अपने शोध कार्यों के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। ये विद्यार्थी हैं-

उत्तम कुमार तंबोली -**उन्नत सोख्ता गढढा के लिए**
पूनम सिंह एवं हिमांगी हालदार- **राख से डिर्टजेंट का निर्माण**
सौमिक कर्माकर-**स्कूली बस्ते के भार को कम करने की तकनीक**
देवोप्रियों गांगुली एवं मानस खेड़कर - **डॉ ब्रिज फॉर टेन**
कुन्नौरिन शब्बाखान-**ब्राम्ही के रस से निर्मित सिल्वर नैनो पार्टिकल्स**

विशिष्ट आकर्षण : जीवंत प्रदर्शनी

कार्यक्रम स्थल पर नक्षत्र वाटिका, श्रीराम स्मृति उपवन एवं श्रीराम सरोवर का जीवंत प्रारूप निर्मित किया गया था जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना था। दर्शकों को अपने क्षेत्र में ऐसे निर्माण कार्यों के लिए प्रेरित किया गया। इस आशय के ब्रोशर भी बाँटे गये।

आदर्श ग्राम संकुल खम्हरिया, बिलासपुर द्वारा संचालित गौशाला में मशीन द्वारा तैयार किये जा रहे गौमूत्र अर्क एवं फिनाईल का प्रशिक्षण भी दिया गया।

मंत्री, सांसद, न्यायाधीश, अधिकारी सबकी आशा और विश्वास से युवा आन्दोलन को बल मिला

1 दिसम्बर की सायंकाल श्री संजय अग्रवाल-न्यायाधीश उच्च न्यायालय बिलासपुर पधारे। उन्होंने इस युवा सम्मेलन को अभूतपूर्व बताया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिया सूत्र 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' अद्वितीय है।

2 दिसम्बर की सायं डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति श्री चंद्रभूषण बाजपेयी, श्री लखनलाल साहू-सांसद बिलासपुर एवं बिलासपुर संभाग के कमिश्नर श्री टी.सी. महावर उपस्थित रहे। श्री महावर ने इस कार्यक्रम की दिव्यता और प्रभाव को जनमानस पर अमिट छाप छोड़ने वाला बताया।

अंतिम दिन श्री अमर अग्रवाल, नगरीय प्रशासन एवं वाणिज्यकर मंत्री ने उपस्थित होकर गायत्री परिवार को एक निष्कलंक संगठन बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि गायत्री परिवार के प्रयासों से निश्चित ही दुनिया में सुख, शांति की स्थापना होगी। इस अवसर पर हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल श्री गौतम चौरडिया भी उपस्थित रहे।

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राजीव अग्रवाल, डॉ. अरूण मढ़रिया, डॉ. राधेश्याम शर्मा, डॉ.एलसी. मढ़रिया, श्री प्रदीप झा आदि की उपस्थिति भी उत्साहवर्धक थी।

बायें-न्यायमूर्ति श्री संजय अग्रवाल और दायें-डॉ. मढ़रिया, सांसद श्री साहू आदि दीप प्रज्वलन करते हुए

शक्तिपीठ पर कार्यकर्त्ताओं की संगोष्ठी

युग निर्माण विद्यालय, चिल्हाटी की प्रस्तुति

श्रीराम स्मृति उपवन, रामाग्रीन सिटी, बिलासपुर का उद्घाटन

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866
संपर्क सूत्र :- फोन-9258369725 (प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक) **email** : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन : news@awgp.in **एवं** news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.12.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2018-20
LICENCE TO POST W.O.
PREPAYMENT VIDE NO.
WPP/04 (RENEWED 2018-2020)